चन्दामामा
अक्तूबर १९८९

रामानंद सागर कृत
रामायण
चित्र-कथा
१२ विभागों में । हिंदी और अंग्रेज़ी में ।
रामायण
प्रति विभाग का मूल्य ५ रुपये
चन्दामामा
विजया कम्बाइन्स
१८८, एन्.एस्.के. मार्ग, वडपलनी,
मद्रास ६०० ०२६ द्वारा प्रकाशित
अनुमति प्राप्त
सागर एन्टरप्राइजस्
नटराज स्टूडिओज, १९४ अंधेरी कुर्ला रोड, मुंबई-४०० ०६९.
ग्रंथ-क्रमांक २ अब समाचारपत्र-विक्रेताओं के पास उपलब्ध
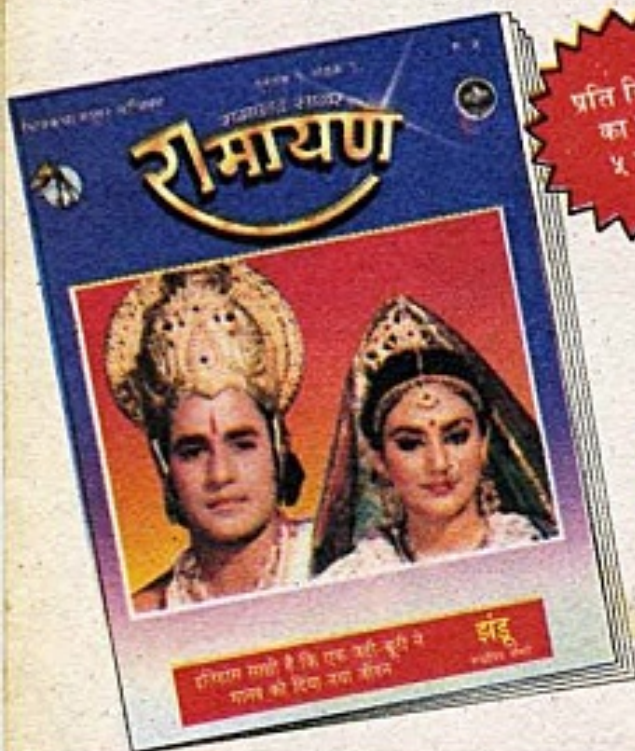
डायमंड कामिक्स में
नन्हें मुन्नों की पहली पसंद
लाऊ जी और विनाशकारी मानव
मोटू छोटू और डाक्टर फंदूशा
कार्टूनिस्ट प्राण का
रमन खलीफा का कुर्ता
पिंकी और गद्दार सेनापति
अंकुर बाल बुक क्लब
सदस्य बनने के लिए आपको क्या करना होगा:–
1. संलग्न कूपन पर अपना नाम व पता भर कर भेज दें। नाम व पता साफ-साफ लिखें ताकि पढ़ने में आसानी हो।
2. सदस्यता शुल्क पांच रुपये मनीआर्डर या डाक टिकट द्वारा कूपन के साथ भेजें। सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।
3. हर माह पांच पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर 2/- रुपये की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री की सुविधा दी जायेगी। हर माह हम चार पांच पुस्तकें निर्धारित करेंगे यदि आपको वह पुस्तकें पसंद हो तो डायमंड कॉमिक्स व डायमंड पाकेट बुक्स की सूची में से चार पांच पुस्तकें आप पसन्द करके मंगवा सकते हैं लेकिन कम से कम चार से पाँच पुस्तकें मंगवाना जरुरी है।
4. आपको हर माह Choice कार्ड भेजा जाएगा। यदि आपको निर्धारित पुस्तकें पसन्द हैं तो वह कार्ड भरकर हमें न भेजें। यदि निर्धारित पुस्तकें पसन्द नहीं हैं तो अपनी पसन्द की कम से कम 7 पुस्तकों के नाम भेजें ताकि कोई पुस्तक उपलब्ध न होने की स्थिति में उनमें 4 से 5 पुस्तकें आपको भेजी जा सकें।
5. इस योजना के अन्तर्गत हर माह की 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी।
सदस्यता कूपन
मुझे अंकुर बाल बुक क्लब का सदस्य बना लें। सदस्यता शुल्क पांच रुपये मनी आर्डर/डाक टिकट के साथ भेजा जा रहा है। (सदस्यता शुल्क प्राप्त न होने की स्थिति में आपको सदस्यता नहीं दी जायेगी) मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूँ।
नाम ....
पिता का नाम ....
पता ....
डाकखाना .... जिला ....
राजन इकबाल और मौत के वारिस
पलटू और प्यारा चुनचुन
डायमंड कामिक्स
मामा भांजा
यहाँ से काटिये
ऐसे 10 कूपन काटकर भेजें और साबू का रंगीन पोस्टर व चाचा चौधरी का स्टिकर मुफ्त प्राप्त करें।
48 रंगीन पृष्ठों में मनोरंजन ही मनोरंजन
डायमंड कामिक्स प्रा. लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

चन्दामामा

अक्तूबर 1989

★

विषय-सूची

★

एक प्रति : ३-००

वार्षिक चन्दा : ३६-००

भारत का सब से अधिक बिकनेवाला कैमरा

Snapper

Snapper कैमरे मुस्कान की पहचान!

एग्फा-गेवर्ट इंडिया लिमिटेड द्वारा मार्केट किया गया

ULKA-12449 HIN

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

यदि कोई काम किसी को सौंपना है, तो पहले यह देखना आवश्यक है, कि जिस व्यक्ति को काम सौंपा जा रहा है, वह उस कार्य को सफलतापूर्वक निभाने की क्षमता रखता है । यह निर्णय करने में ही कार्य की सफलता का रहस्य निहित होता है । "कार्यसाधक" नामक कहानी से हमें इस बात का बोध होता है ।

अमरवाणी

हस्ती हस्त सहस्रेण, शतहस्तेन वाजिनः ।
शृंगिणो दशहस्तेन, स्थान त्यागेन दुर्जनः ।।

[हाथी से एक हजार हाथ दूरी पर, घोड़े से सौ हाथ की दूरीपर और सींगवाले जानवरों से दस हाथ की दूरी पर रहना हितकर होता है; मगर दुर्जन जिस प्रदेश में बसते हैं, उस प्रान्त को ही छोड़ना भला है ।]

वर्ष : ४२ अक्तूबर १९८९ अंक : २

एक प्रति : ३-०० :: वार्षिक चन्दा : ३६-००

प्राचीन काल से फूलते हुऐ फूल

आज तक यही माना जाता था, कि दस करोड़ वर्ष पूर्व से ही फूल फूलते आ रहे हैं । लेकिन जर्मनी के वैज्ञानिकों ने यह प्रमाणित किया है कि पृथ्वीपर तीस करोड़ (३००,०००,०००) वर्षों के पूर्व से ही फूल फूलते आये हैं ।

नागसर्प का स्वागत

जैन मतावलम्बी लोग नागसर्प को देवता के रूप में मानते हैं । धनबाद के समीप निर्मित भगवान परेशनाथ मन्दिर के उद्घाटन के समय उसके गोपुर पर दस फुट लम्बा एक नागसर्प पहुँच गया और वह कार्यक्रम समाप्त होनेतक अपनी फन फैलाकर डोलता रहा । यह देख हज़ारों भक्त उसके सामने लीन हो गये ।

सुप्रसिद्ध कथानायक

युनेस्को द्वारा प्रकाशित विवरण के अनुसार विश्वभर में अधिक भाषाओं में अनूदित—पहले क्रमांक की किताब है "मिकी माउस के साहसकृत्य", द्वितीय स्थान पर लेनिन द्वारा विरचित ग्रन्थ आते हैं, तृतीय स्थान पर हैं अगाथा क्रिस्ती की कहानियाँ और चौथा स्थान है बायबल का ।

लघुकाँप्यूटर

हाल ही में एक इंच से भी पतला, पाकेट बुक जैसा लघु काम्प्यूटर का निर्माण किया गया है । साधारणतः मेज़ पर रखने योग्य आकार वाला काम्प्यूटर जो काम करता है, वही काम यह छोटा सा काम्प्यूटर भी कर देता है ।

साँझा चप्पल

दो कंजूस आदमी शहर में एक मकान किराये पर लेकर उसमें रहते थे । उन में से एक चूड़ियाँ बेचने का व्यापार करता था और दूसरा गिरवी रखकर उधार पैसा देने का ।

एक दिन चूड़ी बेचनेवालेने बंधक व्यापारी से कहा, "हम दोनों आधा-आधा खर्च उठाकर चप्पल का एक जोड़ा खरीदें तो कैसे रहेगा?"

बंधक व्यापारी ने कहा–"तुम्हारा सुझाव तो अच्छा ही है । व्यापार के काम पर जो जाएगा, वह चप्पल पहनकर जाएगा ।"

यह सुझाव बन्धक व्यापारी को अच्छा लगा । दोनों ने मिलकर चप्पल का जोड़ा खरीदा । चूड़ी-व्यापारी चप्पल पहनकर कंधे पर चूड़ियों का बण्डल लटकाये शहर में घूमता हुआ चूड़ियाँ बेचता था । पर बन्धक-व्यापारी अपने मकान के ओसारे में बैठकर ज़रूरतमन्दों की चीज़ो को गिरवी रखकर उन्हें रुपये देकर भेज देता था; इस कारण चप्पल में आधा हिस्सा होने के बावजूद भी उसे उन्हें पहनकर घूमने का मौका ही नहीं मिलता था । यह बात उसके लिये चिन्ता का कारण बन गयी ।

इस बात पर खूब विचार करने के बाद उसे एक उपाय सूझा । रात के समय चप्पल पहनकर सबेरा होने तक घर के चारों तरफ चक्कर काटने का रवैया उसने शुरू किया! चन्द ही दिनों में चप्पल घिस कर टूट गये ।

फिर एक दिन चूडी-व्यापारी ने पूछा, "दोस्त, हम अब नये चप्पल खरीदें?"

"चप्पल खरीदने की बात फिर कभी मेरे सामने नहीं उठाओ ।" बंधक-व्यापारी ने कहा ।

"क्यों? बात क्या है?" चूड़ीवाले ने आश्चर्य में आकर पूछा ।

"रातों में बिना सोये मैं कितने दिन काटूँ? मुझे भी तो सोने की ज़रूरत है न?" बन्धक व्यापारी ने जवाब दिया ।

ताड़ के नीचे दूध

किसी ज़माने में रत्नगिरी नगर में कुबेर नाम का एक व्यापारी रहता था। दुर्भाग्यवश व्यापार में उसका भारी नुकसान हुआ। अब वह सोचने लगा कि क्या किया जाय।

उस हालत में वह अपने भविष्य के बारे में सोच ही रहा था, कि एक ज्योतिषी ने उसे सलाह दी, ''फिलहाल यह नगर आप के लिये अनूकूल नहीं है; इसलिये आप अब समुद्री-यात्रा पर विदेश जाइये। वहाँ व्यापार करते हुए कुछ दिन बिताकर वापस आइये। आप की किस्मत पूर्ण रूप से बदल जाएगी। कुछ समय बाद आप के अच्छे दिन फिर लौट आएँगे।''

कुबेर के इकलौते पुत्र का नाम था समीर। वैसे वह किसी बुरी लत का शिकार तो नहीं था, लेकिन वह अपना अधिकांश समय शराबियों और जुआखोरों के संग बिताया करता था। और उसी का उसे बड़ा अभिमान भी था!

सुमुद्री-यात्रा पर निकलने से पहले कुबेर ने अपने बेटे को बुलाकर समझाया, ''बेटे, मैं कोई व्यापार करने के संकल्प से विदेश जा रहा हूँ। मेरे लौटने तक यहाँ हमारा जो छोटासा व्यापार है, उसे सम्हालते हुए अपनी माँ की सुख-सुविधा का ख़याल करो।''

समीर ने पिता की बात मान ली, मगर कुबेर उससे संतुष्ट न हुआ। उसने फिर कहा, ''मैं जानता हूँ कि तुम काफी बुद्धिमान हो; लेकिन बुरे लोगों से तुम्हारी दोस्ती अच्छी नहीं है। तुम उन शराबियों और जुआखोरों की संगति में न रहा करो।''

पिता कि ये बातें सुनकर समीर आश्चर्य में आ गया। उसने पूछा, ''पिताजी, मेरी समझ में नहीं आ रहा है, कि आप इतने दिन चुप रहे और आज ही ये बातें मुझे क्यों समझा रहे हैं?

इस के पीछे क्या कोई विशेष कारण भी है?"

"हाँ बेटे! कारण है; इसीलिये तो आज विशेष रूप से तुम्हें यह समझाना पड़ रहा है। तुम आज तक घर के केवल एक बालक के रूप में रहे; मगर आज मैं तुम्हें परिवार की ज़िम्मेदारी सौंप रहा हूँ। अब तुम एक बड़े और ज़िम्मेदार आदमी बन गये हो; इसलिये वास्तविक बात तुम्हें समझा कर सावधान कर रहा हूँ।" कुबेर ने गम्भीर होकर कहा।

"पिताजी, उन सब के साथ दोस्ती रखने के पीछे कुछ कारण भी हैं। ये सब मेरे बचपन के मित्र हैं। हम सब बचपन में एक साथ शौक से घूमते, फिरते और खेलते भी थे। अब बड़े होने के बाद उनकी बुरी आदतों पर उँगलीनिर्देश कर उनसे परे हट जाना मैत्री-धर्म के विरुद्ध है। यह रहा पहला कारण। दूसरा कारण यह, कि उनकी तुलना में मैं ही सब प्रकार से बुद्धिमान हूँ। वे लोग सदा मेरे अच्छे गुणों की सराहना करते हैं। उनकी बुरी आदतों से दूर रहकर भी मैं बराबर उन से दोस्ती निभाता रहता हूँ—इस कारण से भी वे प्रतिदिन मेरी प्रशंसा करते हैं। मुझे खूब मानते हैं। और इससे मुझे भी बहुत आनन्द आता है। अब तीसरा कारण भी सुन लीजिये पिताजी—कई लोगों ने मेरे साथ यह दाँव लगाया है कि, ऐसे बुरी लत के आदी लोगों के संग रहकर मैं भी अवश्य बिगड़ जाऊँगा। लेकिन इसे गलत साबित करने के लिये मैं कुछ अधिक ही उनमें घुलमिलकर रहता हूँ।"

पिता कुबेर इस पर हँस कर बोला, "तुम्हारा कहना ठीक है। मगर आज तक तुम उन लोगों की संगति में रहे, यह पर्याप्त है। याद रखो समाज में तुम्हारा स्तर तुम्हारे मित्रों के आधार पर बनता है। अब तुम एक परिवार के ज़िम्मेदार व्यक्ति बन गये हो, इसलिये उन बुरे लोगों की मित्रता छोड़ दो। तुम को मालूम है न, ताड़ वृक्ष के नीचे दूध पीने से क्या होता है?"

पर समीर यह नहीं जानता था कि 'ताड़ के नीचे दूध पीने' का कोई ख़ास मतलब है। मगर यह बात कह दे तो पिता कहेंगे कि 'इतनी मामूली बात भी तुम कैसे नहीं जानते'। इस प्रकार अपना मज़ाक न उड़ाया जाय इसलिये वह चुप रहा।

इसके बाद कुबेर विदेश में व्यापार करने चला गया । एक दिन समीर एक लोटे में दूध ले जाकर गाँव के छोर पर स्थित एक ताड़ के पेड़ के नीचे बैठ गया और दूध पीने लगा । मगर दूध के स्वाद में कोई परिवर्तन न पाकर सोचने लगा, "बाबूजी ने फिर ऐसा क्यों कहा? ताड़ के नीचे दूध पीने पर भी उस में दूध का स्वाद तो वैसा ही बना रहता है ।"

लेकिन समीर को ताड़ के नीचे दूध पीते देख उसके जानपहचान के किसी आदमी ने जाकर उसकी माँ से शिकायत की, कि "माई, तुम्हारा बेटा गाँव के छोर पर के ताड़ के नीचे बैठकर ताड़ी पी रहा है । बुरे लोगों की संगति का असर तो हो ही जाता है न! लगता है, कि आज तक पिता के घर रहते उनके डर से पीता नहीं था । अब तो उसपर किसी का नियन्त्रण नहीं रहा; इसलिये एक एक करके सारे दुर्गुण अपने आप प्रकट हो ही जायेंगे ।"

यह ख़बर पाकर समीर की माँ तो सिर पीट कर रोने लगी । किसी ने जाकर ताड़ के नीचे बैठे समीर को यह समाचार सुना दिया ।

ख़बर लानेवाले उस व्यक्ति से समीर ने कहा, "देखो तो, मैं ताड़ी नहीं; दूध पी रहा हूँ ।"

"ओह! ऐसी बात है?" यह कहकर वह आदमी व्यंग्य में हँसकर वहाँ से चलता बना ।

लोटे में बचे दूध को लेकर समीर अपनी बात साबित करने के लिये-कि वह असल में दूध ही पी रहा था,-तुरन्त माँ के पास पहुँचा ।

उसकी माँ तो तब तक रोयी जा रही थी । उसके पास पहुँचकर समीर ने अपनी बात उसे समझाने की कोशिश की । मगर उसकी बातों पर ज़रा भी ध्यान दिये बिना कड़ककर माँ बोली, "मैं तो आजतक इतना ही समझी थी, कि बुरे लड़कों के साथ तेरी सिर्फ दोस्ती ही है; मगर आज यह मालूम पड़ा कि तुम भी उन बुरी आदतों का शिकार बने हुए हो ।"

"माँ, देखो इस लोटे में ताड़ी नहीं, अभी भी दूध ही है; चाहो तो खुद चखकर देखो ।" समीर अपना समर्थन देता रहा ।

"मुझे वह कुछ देखने की ज़रूरत नहीं है । दूध पीने के लिये तुम्हें ताड़ के नीचे जाकर बैठने की क्या ज़रूरत थी? दूध तो घर में पी

सकते थे न? इतनी भी अकल नहीं रखते हो तुम?" माँ ने डाँटा ।

"माँ, मुझे माफ़ कर दो । मैंने कुछ भी सोचे-समझे बग़ैर ऐसा किया है । आइन्दा ऐसा कभी नहीं करूँगा; लो देखो, घर में ही पी लेता हूँ ।" इतना कहकर बचा हुआ दूध वह पीने लगा ।

समीर की माँ ने झट उसके हाथ से लोटा छीनकर दूर फेंक दिया; और बोली, "तुम्हें ताड़ी पीनी ही है, तो जाओ, ताड़ के नीचे ही बैठ कर पिओ । घर में यह तमाशा मैं बर्दाश्त नहीं करूँगी ।"

"माँ, मैं तो समझाने की कोशिश में हूँ, कि इस लोटे में ताड़ी नहीं, दूध ही है । पर तुम मानती क्यों नहीं?" समीर ने खीझकर पूछ लिया ।

इतने में एक बिल्ली वहाँ आ पहुँची और फर्श पर छितरे दूध को उसने चाट लिया । न मालूम उस बिल्ली को भी क्या हुआ था, अब तक सही ढँग से आयी वह बिल्ली लड़खड़ाती हुई वहाँ से चली गयी ।

समीर की समझ में न आ रहा था कि माँ को क्या जवाब दे । उसने बस, सर झुका लिया ।

तब माँ ने आँखें पोंछते हुए उस से कहा "तुम्हारे पिताजी ने जाने से पहले ही डाँटकर तुम्हें सही रास्ते लाकर खड़ा कर दिया होता, तो आज इन जुआखोरों और शराबियों की कुसंगति में तुम यों न फँसते! पिताजी तो उल्टे तुम्हें परिवार का प्रमुख बनाकर चले गये हैं । अब भी देर नहीं हुई है, तुम इन बुरी लतों से दूर रहकर अपना व्यापार सँभाल लो"

माँ की बातें सुनकर समीर समझ गया, कि ताड़ के नीचे बैठकर दूध पीने पर भी लोगों को यह विश्वास दिला देना, कि वह ताड़ी नहीं दूध ही पी रहा है—कितना कठिन काम है! उसे पिता की बातों का मर्म अब जाकर समझ में आ गया । उसी दिन से उसने अपने बुरे दोस्तों की संगत छोड़ दी और पिता के कहे अनुसार व्यापार सम्हालते अच्छा नाम कमाया ।

डाकू युवराज

हरेभरे पहाड़ों की तलहटी में शान्तिपुर बसा हुआ था। नाम के अनुरूप ही अत्यन्त शान्ति थी वहाँ। यह नगर सुमेध राज्य की राजधानी थी। शुरू से यहाँ के शासक राजाओं ने नगर को खूब सज़ाया-सँवारा और सुन्दर बनाया था। नगर में सुन्दर उद्यान, तालाब तथा मन्दिर जगह-जगह दिखाई देते थे। फिलहाल सुमेध राज्य पर राजा शान्तिदेव का शासन चल रहा था। नगर की तथा पूरे राज्य की जनता को सुखी, सम्पन्न एवम् शान्त वातावरण देने में यह राजा खूब प्रयत्नशील रहता था। इसी कारण आसपास के सभी राज्यों के राजा शान्तिदेव की खूब प्रशंसा किया करते थे। वे शांतिदेव को आदर्श राजा कहते थे और उनकी कई योजनाओं को अपने राज्य में लाने की कोशिश करते।

इसी बात का चर्चा करते हुऐ सेनापति वीरसिंह एक दिन राजा से कहने लगा, "महाराज, राज्य में संपत्ति बढ़ाने का सब से सरल उपाय है पड़ोसी देश पर आक्रमण करना। इस से एक पंथ, दो काज प्राप्त होंगे। एक तो वह राज्य हमारे हाथ आएगा और दूसरे-वहाँ की सारी संपत्ति भी हमारी हो जाएगी। आप मेरी इस सूचना पर ज़रा गौर कीजिए, आप को इस में कुछ तथ्य नज़र आएगा।"

राजा शान्तिदेव ने इस पर मुस्कुरा कर कहा, "वीरसिंह, यह मार्ग सही नहीं है। पड़ोसी राज्य को लूटकर जमा की हुई धन-संपत्ति ज़्यादा दिन हमारे काम नहीं आएगी। इस के अलावा ऐसी संपत्ति हमें

आसानी से प्राप्त होती है, यह देख हमारी प्रजा मेहनत नहीं करेगी । साथ ही लुटी हुई संपत्ति खर्च हो जाते ही हमारे मन में यह इच्छा पैदा हो जाएगी कि, हम फिर किसी दूसरे राज्य पर धावा बोल दें और फिर संपत्ति जुटा लें । और हर बार युद्ध में हमारी ही जीत होगी इस बात का हम कैसे विश्वास करें? अगर हम हार गये, तो दुश्मन हम को भी लूट लेगा न? मानो, फिर हमारी ही जीत हुई; तो भी पराजित राजा हम से बदला लेने के घात में रहेगा न? उस स्थिति में हमें शान्ति कैसे मिलेगी? दुनिया का आज तक का इतिहास बताता है कि एक युद्ध दूसरे को जन्म देता है । युद्ध द्वारा शांति कदापि संभव नहीं । युद्ध मानव को राक्षस बनाता है ।"

"महाराज, अगर हमें कभी युद्ध ही नहीं करना है तो हमें सैनिक बल की आवश्यकता ही क्या? इतना खर्च करके हम जो सेना हमेशा तय्यार रखते हैं, वह सारा व्यय व्यर्थ ही समझना चाहिए । और यह गलती दुनिया के सभी राजा आज तक करते आये हैं!" वीरसिंह ने उतावला होते हुए पूछा ।

"नहीं कैसे? अन्य राजाओं के आक्रमणों से अपनी रक्षा के लिये तो आवश्यकता है ही । पर हमारा आशय यह है कि युद्ध के कारण होनेवाले अनर्थों को समझ कर सभी राजा सैनिक बल को रद्द कर दें । तुम जानते ही हो कि, युद्धों के कारण अपार जनसंहार, संपत्ति का व्यय और समय का भी दुरुपयोग होता है । दरअसल युद्ध ही बन्द हुए, तो हम अपनी सारी शक्तियाँ जनता-कल्याण के कार्यों में लगा सकेंगे ।" शान्तिदेव ने समझाया ।

"प्रभु, आप मुझे क्षमा करें । आप तो शान्ति के सपने देख रहे हैं । आप सपनों की दुनिया में रह रहे हैं । आपके इन आदर्शों को प्रत्यक्ष करना नितान्त कठिन है । महाभारत ही को लीजिए, एक विशाल युद्ध-गाथा नहीं है वह?" वीरसिंह राजा की अवहेलना करते हुऐ बोला ।

सेनापति वीरसिंह राजा का न केवल निकट का रिश्तेदार था, बल्कि उसका बालसखा भी था । इस कारण वह राजा के साथ खूब खुल कर बात करता था । राजा को प्रसन्न करने के लिए वह बात नहीं करता था । राजा को क्रोध आ जावे ऐसी कोई बात कहनी हुई तो

निर्भयता के साथ कह देता । राजा भी सेनापति को कभी ग़लत नहीं समझता था ।

"वीरसिंह, तुम्हारा कहना सच है कि मैं सपना देख रहा हूँ । कपट से एक दूसरे का गला काटते हुए अपना समय बरबाद करने के बदले निर्मल हृदय से परस्पर सहयोग करते हुए दूसरे के सुख को अपना सुख मानकर सारी जनता आनन्दपूर्वक अपना जीवन यापन कर रही है—ऐसा सपना मैं हमेशा देखा करता हूँ । इसलिये हमारी सेना को जनता के कल्याणकारी कार्यक्रमों के लिये प्रवृत्त करने का सुझाव देना चाहता हूँ मैं । हमारी सेना की मदद से हम आवश्यक प्रदेशों में नदियों पर पुल बनवा लेंगे; जहाँ नदियाँ न हों, वहाँ नहरें खुदवा देंगे । रास्तों के दोनों ओर हम वृक्षों को रोपवा देंगे । अन्न पैदा करने के लिये खेतों में अथक श्रम करनेवाले किसानों की हमारी सेना मदद करे...." इसके साथ राजा और कुछ कह रहे थे ।

इतने में राजा को टोक कर वीरसिंह ग़ुस्से से बोला, "महाराज, आप का यह कथन अदभुत है! मैं अपने सैनिकों को आज आदेश दूँगा कि, वे आज से दूध दुहनेवाले ग्वालों की मदद करें और अपने अपने घरों में औरतों की भी सहायता करें । सारी सैनिकी शिक्षा बेकार है । हमारे सैनिकों की संख्या कम करने की तुरन्त एक योजना बना दीजिए ।"

वीरसिंह की बातों पर राजा मन्दहास कर उठे । सेनापति राजा से दो साल छोटा था, इस कारण राजा उससे छोटे भाई जैसा प्यार करते थे । राजा को सेनापति की बातों पर बिलकुल ग़ुस्सा नहीं आया । अपने दृष्टिकोण को समझाने की कोशिश करते हुए उन्होंने कहा—

"वीरसिंह, गोपालों और औरतों की मदद करना कोई नीच काम नहीं है । अन्य लोगों के प्राण हरा कर उनकी धन-संपत्ति का अपहरण करने की अपेक्षा ये सारे काम अत्यन्त उत्तम हैं । तुम ज़रा शान्तचित्त होकर इन बातों पर विचार कर लो । तब जाकर तुम्हें शान्ति का मूल्य समझ जाएगा ।"

उसी समय मन्त्री वहाँ आ पहुँचा और सेनापति बात समाप्त कर वहाँ से चला गया । राजा भी मन्त्री के साथ अन्य विषयों

पर चर्चा में लग गये ।

सेनापति वीरसिंह ने उसी रात अपने दलपतियों को गुप्त रूप से एक स्थान पर बुलवा भेजा और कहा, "दोस्तों, हमारे महाराजा आज से तुम लोगों से यह आशा रखते हैं कि तुम लोग हल थामकर खेतों में काम करो । और औरतें रसोई बनाते समय तुम लोग उनके पास जलावन पहुँचा दो । देश की सुरक्षा की अपेक्षा ये काम उनकी दृष्टि में अधिक उपादेय हैं । वे शांति का सपना देख रहे हैं और युद्ध टालना चाहते हैं ।"

यह सुनकर दलनायकों को बहुत आश्चर्य हुआ । थोड़ी देर मौन रहकर वीरसिंह ने फिर अपनी बात शुरू की, "मित्रों, हम लोग सैनिकी शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं; साहस हमारा प्राण है; खड्ग चलाना हमारा प्रमुख कर्तव्य है । उसी स्थिति में क्या हम अपनी तलवारों में जंग लगने देंगे?"

"नहीं, कदापि नहीं ।" सब ने एक स्वर में कहा ।

"अरे, तुम लोग ज़ोर से मत चिल्लाओ । दीवारों के भी कान होते हैं । राजा तक यह खबर गई तो वे हम पर गुस्सा करेंगे । ज़रा आहिस्ता बोलो ।" वीरसिंह ने उन्हें चेतावनी दी ।

वीरसिंह के खूब सावधानी बरतने पर भी भेदियों द्वारा उसके षड्यन्त्र का समाचार राजा के कानों तक पहुँचा । उसकी योजनाओं का विवरण राजा को प्राप्त नहीं हुआ । फिर भी राजा ने इस बात पर विशेष ध्यान भी नहीं दिया । राजा स्वभाव से ही सज्जन पुरुष थे, इसलिये उन्होंने कल्पना तक नहीं की कि उनका रिश्तेदार व बालसखा वीरसिंह इस प्रकार धोखा दे सकता है! साथ ही राजकुमार की दूसरी बरसगाँठ निकट थी । जन्मदिन के उस सुअवसर पर अन्नदान, नृत्य-गान आदि मनोरंजन के कार्यक्रमों के साथ आतिशबाजी वगैरह के प्रबन्ध किये जा रहे थे । बन्दनवार बाँधने और मंच बनाने जैसे कामों में सैकड़ों कर्मचारी नियुक्त किये गये थे । इसलिये इस उत्सव के बाद सेनापति वीरसिंह से बात करने का संकल्प करके राजाने उसकी धोखाधड़ी की ओर ज़रा असावधानी ही बरती ।

युवराज की बरसगाँठ के दिन प्रातः काल से मंगलवाद्यों के साथ उत्सव के कार्यक्रम शुरू हुए । राजप्रासाद के विशाल मण्डप में, जो अत्यन्त वैभवपूर्वक अलंकृत किया गया था, रानी अपने पुत्र को गोद में बिठाकर उच्चासन पर विराजमान हुई थी । उसके पीछे उसकी सखियाँ खड़ी आपस में हँस हँस कर कुछ बातें कर रहीं थीं । सैकड़ों नर-नारियाँ रानी व युवराज को शुभकामनाएँ देने आ पहुँची थीं ।

देर तक वैसे ही बैठे रहना रानी को कष्टप्रद लग रहा था; फिर भी राजा और उसके परिवार के प्रति जनता जो श्रद्धा और भक्ति दिखा रही थी उस पर वह अत्यन्त मुग्ध हो उठी थी ।

रात होते ही सोते हुए शिशु को लेकर रानी शयनगृह में पहुँची ।

आतिशबाजी देखने के लिये हज़ारों लोग महल के सामने इकठ्ठा हुए । एक ओर नृत्य-कार्यक्रम चल रहा था । दूसरी ओर हास्य-नाटक देखते हुए लोग खिल खिलाकर हँस रहे थे । वहाँ का सारा वातावरण ही कोलाहलपूर्ण था । साधारणतया राजमहल के द्वारों पर पहरा रहता था, मगर उत्सव के कारण लोगों के आवागमन के लिये उस दिन दरवाज़े खुले छोड़ दिये गये थे ।

रानी सोने का प्रयत्न कर रही थी, तभी राजा अचानक शीघ्र गति से शयनगृह में आ पहुँचे । राजा के आगमन पर रानी विस्मित रही, इस के पूर्व राजा ने कभी भी ऐसे हठात् शयन-गृह में प्रवेश नहीं किया था ।

"महाराज, आप बहुत ही थके हुए लग रहे हैं ।" रानी ने कहा ।

राजा ने बिना कुछ उत्तर दिये वहाँ खड़ी दासी की ओर देखा; तब वह वहाँ से चली गयी ।

"क्या हुआ महाराज?" रानी ने व्यग्रता से पूछा ।

राजा ने झट शयनगृह के किवाड बन्द किये और अन्दर से चिटखनी लगा दी । तब अपने माथे का पसीना पोंछते हुए उन्हों ने कहा, "सविस्तार समाचार सुनाने का समय नहीं है यह । हमारे प्राणों को ख़तरा उत्पन्न हो गया है; तुम्हें तत्काल यहाँ से बचकर निकलना होगा ।"

"अकेले नहीं, हमारे पुत्र को साथ लेकर जाना पड़ेगा तुम्हें ।"

"आप को यहाँ छोड़कर कैसे जा सकती हूँ मैं?" रानी ने दुख भरे स्वर में पूछा ।

"देवी, हमारे इस पुत्र के लिये तुम्हें मुझे त्यागना पड़ेगा ।" राजा ने गद्गद् आवाज़ से कहा ।

थोड़ी देर बाद फिर वे बोले, "शत्रु का वैसे मुझपर ही निशाना है, मगर उन्होंने हम तीनों का अन्त करने की योजना बनायी है । मैं भी यदि तुम्हारे साथ निकल आऊँ तो वे किसी प्रकार हम को ढूँढ़ कर बन्दी बनाने का प्रयत्न क़रेंगे । लेकिन मैं यदि यहीं रह कर युद्ध करूँ तो तत्कालिक रूप में ही सही, मगर वे तुम्हें व राजकुमार को भूल सकते हैं ।" राजा ने रानी को अपना विचार समझा दिया ।

इसके बाद राजा ने रानी को थोड़े में बता दिया कि, किस प्रकार वीरसिंह अपने अनुचरों की मदद से राजसिंहासन पर कब्जा करना चाहता है, और इस उत्सव के कोलाहल का फायदा उठाकर राजपरिवार का सर्वनाश करने का षड्यन्त्र उसने कैसे रचा है ।

वैसे प्रजा व साधारण सैनिकों के मन में राजा के प्रति आदर-भाव ही था; मगर इतस्ततः बिखरी हुई लाखों लोगों की इच्छा के विरुद्ध सुसंगठित अल्पसंख्य लोग भी विजय साध सकते हैं ।

गुप्तचरों द्वारा राजा को विदित हुआ, कि राजमहल के सभी द्वार वीरसिंह के सैनिकों के कब्जे में हैं । एकाध घंटे में अपूर्व अतिषबाजी

"क्या गुप्त मार्ग से निकलना होगा?" रानी ने भयमिश्रित आश्चर्य से पूछा ।

"हाँ, हाँ!" राजा ने गम्भीर होकर कहा ।

रानी को लगा, मानों उसके सिरपर वज्रपात हो गया हो । शयनगृह से अरण्य के मध्य तक एक सुरंगमार्ग था । उसका रहस्य राजा को उस के बाप दादाओं से मालूम था । राजा शान्तिदेव ने रानी को भी एक बार वह मार्ग दिखाया था । दोनों एक दिन उस मार्ग से थोडी दूर जाकर वापस आये थे । मगर उन्होंने कभी मन में भी नहीं सोचा था, कि इतने शीघ्र ही अपने प्राणों की रक्षा के लिये उस मार्ग से भागने की नौबत आ पड़ेगी ।

"क्या मुझे अकेले ही जाना पड़ेगा?" रानी ने भयकंपित स्वर में पूछा ।

का कार्यक्रम शुरू होनेवाला था।

महल जैसा विशाल अतिष आसमान में उड़कर भयंकर ध्वनि के साथ फटनेवाला था। प्रजा जब उस मनोरंजक कार्यक्रम में निमग्न होगी, तभी वीरसिंह तथा उसके अनुचर राजमहल में घुसकर राजपरिवार को कत्ल करनेवाले थे।

"महाराज, आप के अंगरक्षक कहीं दिखाई नहीं दे रहे हैं?" रानी ने पूछा।

"मनोरंजन के कार्यक्रम देखने के लिये मैं ने ही उन्हें छुट्टी दे दी है। इस समय मैं राजमहल के बाहर कदम नहीं रख सकता। वीरसिंह के सैनिक ही दरवाज़ों पर पहरा दे रहे हैं। उनकी आँख बचाकर निकलना नामुमकिन है। बाहर किसी को मालूम तक नहीं है, कि हम लोग यहाँ बन्दी बने हुए हैं।" खिन्न स्वर में राजा ने जवाब दिया।

"आप अब इस हालत में क्या करना चाहते हैं?" रानी ने पूछा।

मैं दुश्मन के चँगुल से बचने का प्रयत्न करूँगा। संभव न हुआ, तो उन का सामना करूँगा। तुम यदि मेरी सूचना का पालन करोगी, तो समझ लो, कि हमें आधी सफलता हाथ लगी है।" राजा ने कहा।

"आप आज्ञा दीजिये, मैं क्या क्या करूँ?"

"देवी, अब समय व्यर्थ गँवाये बिना तुम यहाँ से भाग निकलो। तुम और कुमार सकुशल निकल गये, तो वही मेरे लिये एक प्रकार की विजय होगी। सच कहूँ, तो शत्रु से मुकाबला कर के बचने की मुझे कोई उम्मीद नहीं है। अब चर्चा करने में भी कोई प्रयोजन नहीं।" राजा ने स्पष्ट किया।

"प्रभु, मेरे किये यह संभव नहीं है। आप को मृत्यु के हाथों समर्पित कर मैं यहाँ से भाग नहीं सकती।" रानी एकदम विलाप कर उठी।

राजा ने रानी की बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया। वे गुप्त मार्ग का द्वार खोलने में मग्न हो गये। किसी को संदेह भी न हो, इस प्रकार शयन-गृह के समीप ही गुप्त द्वार था।

थोड़ी ही देर में वह मार्ग खुल गया। अंधकारयुक्त उस मार्ग में झाँकते हुए शान्तिदेव बोले, "देवी, तुम एक हाथ में राजकुमार को संभालकर दूसरे हाथ में मशाल थामो और इस मार्ग में प्रवेश करो

इस सुरंग में हर पाँच सौ गज की दूरी पर एक के हिसाब से बारह मणि जड़े हुए हैं, इस बात से तुम भली भाँति वाकिफ़ हो । अँधेरे में वे मणि चमकते रहेंगे और मशाल की रोशनी पड़ने पर वे ज़्यादा ही दमक उठेंगे । अंतिम मणि तक पहुँचने के बाद तुम अगर वह मणि दो-तीन बार घुमाओगी, तो उस पार का द्वार खुल जाएगा ।''

अब राजमहल के बाहर का कोलाहल अचानक बन्द हो गया और वहाँ नीरवता छा गयी ।

''देवी, प्रतीत होता है, कि बीरसिंह आ रहा है । तुम शीघ्रता से निकल पड़ो । इस जन्म में न सही,अगले जन्म में हम अवश्य मिलेंगे ।'' इतना कहकर राजा ने निद्रा में गड़े शिशु को रानी के हाथ में थमा दिया । इसके बाद रानी के हाथ में मशाल देकर सुरंग में उतरने में उसकी मदद की ।

साश्रु नयनों से अपनी ओर दीनतापूर्वक देखनेवाली रानी से राजा ने कहा, ''तुम को इस प्रकार भेजने में मुझे अतीव दुख हो रहा है । फिर भी हमारे बेटे की सुरक्षा के लिये ऐसा करना अनिवायर्य है। अगर इसी वक्त यह काम नहीं किया तो हम सब के प्राण धोखे में है । इस लिए बड़े दुख के साथ मैं तुम को खाना कर रहा हूँ । रोओ नहीं ।''

थोड़ी ही देर में अंधकार ने रानी को घेर लिया । रोती हुई रानी सुरंग मार्ग पर आगे बढ़ी । उसे राजा के बारे में बड़ी चिन्ता होने लगी । पर कुछ कर नहीं सकती थी । ढाढ़स के साथ कदम कदम आगे बढ़ती रही । अंधेरे में मार्ग भी कुछ दिखाई नहीं दे रहा था ।

राजा ने गुप्त मार्ग का द्वार बन्द किया । उसी क्षण बाहर से चारों दिशाओं को प्रतिध्वनित करनेवाली भयंकर ध्वनि हुई । अतिषबाजी शुरू हो चुकी थी ।

इतने में शयनगृह के किवाड़ों पर भारी आवाज़ हुई । राजा ने तत्काल म्यान से तलवार खींचकर गरजकर पूछा, ''कौन है वहाँ पर?''

(सशेष)

गायक पिशाच

दृढ़व्रती विक्रमादित्य वृक्ष के पास लौट आये, पेड़ पर से शव को उतारा और हमेशा के जैसे उसे कंधे पर डाल श्मशान की ओर चलने लगे। तब शव में वास करनेवाले बेताल ने कहा—"राजन्, अपनी शक्ति और सामर्थ्य को जाने बिना जो अपने बस के बाहरकी ज़िम्मेदारी सर पर लेता है, उसे अपमान और अपयश प्राप्त होता है। लोग उसकी अवहेलना करते हैं। मैं नहीं जानता कि आपने जो ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले ली है, वह आपके बस की है या नहीं। मैं आपको एक पिशाच की कहानी सुनाता हूँ, जिसने जीवन में संपूर्ण संतोष मिलने तक अपना घर न छोड़ने का हठ किया था, पर थोड़े ही समय बाद वह घर छोड़ कर भाग गया। यह कहानी सुनकर आप अपने परिश्रम भूल जाएँगे। सुनिए—"

बेताल कहानी सुनाने लगा—

पुराने ज़माने की बात है। हरपुर में

हरिशर्मा नाम का एक गायक रहा करता था। उसके चार पुत्र थे—रामशर्मा, कृष्णशर्मा, देवशर्मा तथा विष्णुशर्मा। हरिशर्मा चाहता था कि अपने समान सभी पुत्र भी महान् गायक बनें।

अपने इस सपने को साकार करने के लिए हरिशर्मा ने अपने पुत्रों से संगीत का अभ्यास कराया और फिर उन्हें समझाया—"मेरी आयु बढ़ती जा रही है। मैं तुम चारों में से किसी एक को मेरे समान संगीतज्ञ बनाना चाहता हूँ। हरिपुर के निवासी शिवशर्मा ही इस बात का निर्णय कर सकते हैं कि तुम में से कौन इसके अधिक योग्य है। तुम लोग एक बार जा कर उनसे मिल जाओ।"

पिता की इच्छानुसार चारों भाई हरिपुर पहुँचे और शिवशर्मा के घर गये। शिवशर्मा ने उनकी बातें ध्यानपूर्वक सुनीं। और कहा—"तुम लोग बिलकुल ठीक समय पर मेरे पास पहुँचे हो। इस गाँव की सीमा पर मेरा एक मकान है। एक गायक पिशाच ने आजकल उस पर कब्ज़ा कर लिया है। वह वहाँ दिन-रात संगीत की उपासना करता है। वह एक ऊँचे दर्ज़े का संगीतज्ञ है। उसका संगीत बड़ा अद्‌भुत होता है, फिर भी वह ठहरा एक पिशाच! इस लिए रात के समय कोई वहाँ जाने का साहस नहीं करता। उस गायक पिशाच के कारण मुझे अपने अच्छे मकान को खाली रखना पड़ रहा है। इस मामले में तुम लोग मेरी मदद कर सकोगे?"

"यह पिशाच बड़ा शक्तिशाली है। मुझे मालूम हुआ है कि केवल संगीत के विद्वान ही उसको अपने अधीन कर सकते हैं। संगीतज्ञों के प्रति वह पिशाच बहुत आदर और श्रध्दा-भक्ति रखता है!" शिवशर्मा ने चारों को समझाया।

चारों भाइयों में रामशर्मा विशेष साहसी था। इस लिए सब से पहले वही गायक पिशाच के घर जाने को तैयार हो गया। शिवशर्मा ने उसकी खूब तारीफ की और रात होने पर उसे पिशाच के मकान का रास्ता दिखा दिया।

रामशर्मा ने साहस के साथ उस मकान में प्रवेश किया। देखा कि पिशाच कोई शास्त्रीय राग अलाप रहा है। तालियाँ बजाते

हुए रामशर्मा ने कहा–"वाह, तुम्हारा संगीत अद्‌भुत है। यह राग गाना किसी साधारण गायक के लिए संभव नहीं।"

पिशाच ने अपना संगीत रोक कर पूछा–"महाशय, मेरे संगीत का रसग्रहण आप कैसे कर सकें? क्या आप कोई संगीतज्ञ हैं?"

रामशर्मा ने कहा–"जी हाँ। मैंने तुम्हारे बारे में सुना और तुम्हें देखने चला आया।"

पिशाच ने कहा–"बड़ी प्रसन्नता है मुझे, अगर आप अपनी पसंद का कोई राग सुना सकें तो और खुशी होगी मुझे! सुनाएँगे?"

रामशर्मा ने तत्काल एक बढ़िया राग गाया। पिशाच ने उसकी संगीत-प्रतिभा की खूब प्रशंसा की और कहा–"देखिए, बगैर आपसे पूछे आपके मन की बात मैंने जान ली है। पर जब तक मेरी संगीत-साधना के लिए समुचित पुरस्कार पाकर मैं पूर्ण रूप से संतुष्ट नहीं हूँगा, तब तक मैं यह मकान छोड़कर नहीं जाऊँगा।" फिर पिशाच ने रामशर्मा को एक कीमती रत्न पुरस्कार स्वरूप दे दिया।

एक मानवातीत शक्ति द्वारा अपने संगीत को पुरस्कार प्राप्त हुआ, इस लिए रामशर्मा को बड़ी खुशी हुई और उसने सारा समाचार शिवशर्मा को सुनाया।

लंबी साँस लेते हुए शिवशर्मा ने कहा–"तुम्हें अपने संगीत के लिए पुरस्कार मिला ज़रूर, पर मेरा काम तो बनने से रहा।"

अब दूसरे भाई कृष्णशर्मा ने कहा–"गायक पिशाच अपने संगीत के लिए पुरस्कार चाहता है क्या! मैं उसको एक अच्छा-सा पुरस्कार दूँगा।" उस दिन रात को कृष्णशर्मा पिशाच के मकान पर पहुँचा, उसका गायन सुन कर ज़ोर से तालियाँ बजाईं और रसग्रहण करते हुए बोला–"संगीत के महापंडित हरिशर्मा का मैं पुत्र हूँ। मेरा नाम है कृष्णशर्मा। तुम सुर की दुनिया के सम्राट हो। 'मानवातीत गायक शिरोमणी' की उपाधि मैं तुम्हें प्रदान करता हूँ।"

पिशाच ने आदर और भक्ति के साथ कृष्णशर्मा को प्रणाम किया और निवेदन किया–"लंबी अवधि के बाद मुझे अपने संगीत के लिए उचित पुरस्कार प्राप्त होने की

खुशी है । क्या मैं आपसे प्रार्थना करूँ कि आप भी मुझे कोई राग-रागिनी सुना कर आनन्द प्रदान करें?"

कृष्णशर्मा ने एक अपना प्रिय राग अलापा । उसे सुन पिशाच प्रसन्न हुआ और कहा—"आपके गायन के पुरस्कार-स्वरूप यह एक रत्न लीजिए । पर मेरी समझ में नहीं आता कि आपने जो उपाधि मुझे प्रदान की उससे मुझे संतोष नहीं हो रहा है । और जब तक मुझे पूरा संतोष प्राप्त नहीं होगा, तब तक मैं यह घर छोड़ कर नहीं जाऊँगा!"

कृष्णवर्मा ने लौट कर शिवशर्मा को सारा वृत्त कह सुनाया । उसने अपना अभिप्राय प्रकट किया—"मेरा अद्‌भुत संगीत सुन कर शायद पिशाच को असंतोष हुआ । उसे लगा होगा कि उसके अपने संगीत में वह असर नहीं है । इस कारण पिशाच को उपाधि से जो आनन्द प्राप्त हुआ वह जाता रहा ।"

इस पर देवशर्मा ने आगे बढ़ते हुए कहा—"तो मैं यह भूल सुधार लेता हूँ ।" दूसरे दिन रात को वह पिशाच के घर पहुँचा । उस वक्त पिशाच अपना एक गीत गाना प्रारंभ करनेको था, तब देवशर्मा ने कहा—"तुम्हारे संगीत को सुनने के बाद तुम से स्पर्धा करके तुम को हराने की मेरे मन में इच्छा हो रही है ।" इतना कह कर उसने अपना राग अलापना शुरू किया ।

देवशर्मा का संगीत समाप्त होते ही पिशाच ने उसकी भूरि भूरि प्रशंसा की और उसको पुरस्कार के रूप में एक रत्न प्रदान किया ।

रत्न का स्वीकार करके देवशर्मा ने निवेदन किया—"महाशय, इस रत्न को बेचकर जो धन मिलेगा, वही मेरी आजीविका का एकमात्र साधन होगा । संगीत विद्या में सर्वोत्तम पंडित माने जानेवाले हरिशर्मा के पुत्र होकर भी मैं तुम्हारे साथ संगीत में स्पर्धा नहीं सका, इस लिए भविष्य में मैं किसी को भी अपना संगीत नहीं सुनाऊँगा ।"

इस पर पिशाच ने कहा—"पंडितवर, आपकी बातों से मुझे संतोष अवश्य हुआ है । पर मेरा मन संतुष्ट नहीं है । मेरा संगीत सुननेके कारण अगर आप अपने संगीत से संन्यास लेने की सोचते हैं तो मुझे बड़ा दुख होगा । यों मत कीजिए ।" फिर पिशाच ने

उसको वहाँ से रवाना किया ।

देवशर्मा की बातें सुनकर शिवशर्मा ने कहा—"लगता है, पिशाच को मेरे घर से भगाने में तुममें से कोई भाई समर्थ नहीं हो रहा है । तुम लोग इतनी दूर से आये हो, इस लिए सब को एक बार प्रयत्न अवश्य करना चाहिए ।" अतः अगली रात शिवशर्मा ने विष्णुशर्मा को पिशाचवाले मकान में भेज दिया ।

विष्णुशर्मा जब पिशाच के मकान तक पहुँचा, तब वह एक राग अलाप रहा था । वह चुपचाप पिशाच के सामने बैठकर उसका संगीत सुनने लगा । पिशाच देर तक गाता रहा, और विष्णुशर्मा तन्मय हो सुनता रहा ।

गायन समाप्त होने पर जब पिशाच ने विष्णुशर्मा को सामने बैठे देखा तो पूछा—"आप कौन हैं जी?"

विष्णुशर्मा ने कहा—"परिचय क्या दूँ? कलाकारों का परिचय तो उनकी कला द्वारा ही होता है ।" कहकर उसने एक राग अलापना शुरू किया ।

विष्णुशर्मा का गायन समाप्त होने पर पिशाच ने विष्णुशर्मा से कहा—"महाशय, इतने समय बाद आज मेरे संगीत के लिए समुचित पुरस्कार मुझे प्राप्त हुआ है । अब मैं इस मकान को छोड़ कर चला जा रहा हूँ ।" और फिर पिशाच अदृश्य हो गया ।

यह कहानी सुनाकर बेताल ने राजा से कहा—"राजन्, क्या यह बात आश्चर्यजनक नहीं है कि अपने संतुष्ट होने का समाचार सुनाकर पिशाच अचानक अदृश्य हो गया? अपने को संगीतज्ञ बताकर प्रति दिन रात के

समय कोई न कोई आ पहुँचता और उसके गायन में बाधा डालता। संभवतः इससे पिशाच चिढ़ता होगा। इसी लिए उसका मकान को न छोड़ने का हठ क्रमशः ढीला हो गया, यहाँ तक कि वह मकान छोड़कर भाग गया। वैसे चारों भाई संगीत-विद्या में समान योग्यता रखते थे, फिर भी तीन भाई अपने गायन द्वारा पिशाच को संतुष्ट न कर सके, और चौथे भाई विष्णुशर्मा मात्र उसे संतोष दे सके यह कैसे? राजन् मेरे इस संदेह का समाधान जानकर भी न देंगे तो आपका सर फूट कर टुकड़े टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर राजा विक्रमादित्य ने उत्तर दिया—"जो कुछ हुआ उसमें पिशाच के व्यवहार के संबंध में आश्चर्य करने की कोई बात नहीं है। संगीतज्ञ को सुयोग्य श्रोता पाकर ही संतोष होता है। चार भाइयों में से प्रथम तीन भाइयों ने पिशाच के गायन की प्रशंसा अवश्य की, पर उसको पूर्ण रूप से सुनने का प्रयत्न नहीं किया। उत्तम संगीत को कोई भी बीच में रोक नहीं सकता। इसी कारण पिशाच को अपने गायन के प्रति असंतोष हुआ। केवल चौथे भाई विष्णुशर्मा ने पिशाच के गायन को बीच में बाधा डाले बिना पूर्ण रूप से सुना। इसके बाद विष्णुशर्मा का संगीत सुनकर पिशाच समझ गया कि वह कैसा महान् संगीतकार है। ऐसे महान विद्वान ने उसके संगीत को पूर्ण रूप से सुना, इस संतोष के साथ पिशाच ने उसके मन की इच्छा की पूर्ति करने का निश्चय किया और वह घर छोड़कर चला गया। विष्णुशर्मा के मन में पिशाच को उस मकान से भगाने की इच्छा से बढ़कर उसके संगीत को सुन कर आनन्द पाने की इच्छा अधिक प्रबल थी। इस लिए अब हरिशर्मा को चाहिए कि वह अपने चौथे पुत्र विष्णुशर्मा को अपने समान महान् संगीत विद्वान बना दें। चार पुत्रों में से विष्णुशर्मा ही संगीत का मर्म जानता है।

राजा के इस प्रकार मौन होने ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो पुनः वृक्ष पर जा बैठा।

(कल्पित)

कार्य साधक

सौवीर और मत्स्यदेश अड़ोस-पड़ोस के देश थे । कई पीढ़ियों से इन दोनों देशों में मैत्री-संबंध थे । लेकिन अचानक मत्स्यदेश के राजा ने सौवीर देश के साथ युद्ध की घोषणा की । सौवीर-राजा को युद्ध का कारण भी मालूम नहीं था, इसलिये वे एकदम तड़प उठे । सब प्रकार से सौवीर-राज्य मत्स्यदेश की तुलना में छोटा ही था । सौवीर-राजा स्वयम् यह भली भाँती जानते थे, कि मत्स्यदेश के साथ युद्ध की नौबत आये, तो अपनी विजय ही निश्चित है ।

इसी हालत में मत्स्यदेश का राजदूत सौवीर राज्य में आकर राजा के दर्शन करके बोला, "महाराज, हमारे राजा को यह अच्छी तरह विदित है, कि युद्ध करने से जनता एवं संपत्ति का क्षय होगा । इसलिये उन्हों ने मेरे द्वारा संदेश भेजा है कि—यदि आप हमारे राजा के सामन्त बनना स्वीकार करें तो युद्ध का प्रश्न ही नहीं उठेगा ।"

ज़रा-सा सोचकर सौवीर राजा ने कहा, "तुम जाकर अपने राजा से कह दो, कि हम तुम्हारे सन्देश का उत्तर देने के लिये दो सप्ताह की अवधि चाहते हैं । हमारा दूत तुम्हारे महाराज के दर्शन करके हमारा अभिप्राय सुना देगा ।"

सौवीर-राजा का यह प्रति-सन्देश लेकर मत्स्यदेश का दूत लौट गया ।

सौवीर-राजा समझ नहीं पा रहा था कि मत्स्य-राजा को क्या उत्तर दे । अगर सामन्त बनना स्वीकार करे तो यह एक तरह का अपना अपमान है । अस्वीकृति में भी धोखा नज़र आ रहा था । उसने अपने मन्त्री से परामर्श किया ।

"इस सम्बन्ध में विशेष भय खाने की ज़रूरत नहीं है महाराज! हमारे दरबारी कवि सृजनशर्मा को दूत बना कर भेज दीजिये । वे

समयानुकूल और दूसरे पक्ष की समझ में आने लायक बात कर के उन्हें संतुष्ट करने में माहिर हैं। साथ ही कार्यसाधक भी हैं। उनका दूतकार्य यदि असफल हो जाय, तो फिर हम सोचेंगे, कि आगे क्या करना चाहिये हमें।" मन्त्री ने राजा को कुछ आश्वासित करते हुए कहा।

मन्त्री की यह सलाह राजा को खूब जँची। सृजनशर्मा को वस्तुस्थिति का परिचय दिलाकर मत्स्यदेश में दूत बनकर जाने का आदेश उन्होंने दे दिया।

सृजनशर्मा ने पहले कुछ भेदियों को मत्स्यदेश भेज कर मत्स्य राजा के बारे में आवश्यक जानकारी हासिल की। मत्स्यदेश के राजा स्वभावतः सज्जन और विद्वान भी हैं। सौवीर राज्य पर अधिकार करने की आकांक्षा उन के मन में नहीं है; मगर सौवीर राज्य की खुशहाली देखकर राजा के एक अंतरंग सलाहकार के मन में ईर्ष्या जगी और उसी के उकसाने पर मत्स्यराजा यह धावा बोल दे रहे हैं।

मत्स्यराजा के अंतरंग सलाहकार कुल तीन हैं। एक है धनगुप्त, जो बहुत बड़ा व्यापारी है। दूसरा माधववर्मा है—राजा का सेनापति; और तीसरा है मन्त्री सोमशेखर।

इन तीनों के स्वभाव भी सृजनशर्मा ने अपने गुप्तचरों द्वारा जान लिये। धनगुप्त लालची है, माधव वर्मा कठोर स्वभाव का है और मन्त्री सोमशेखर निरा मूर्ख है! सृजनशर्मा मत्स्यदेश पहुँचा। रात्री के समय वह धनगुप्त को उसके रहस्य-कक्ष में मिला। अपने साथ लाये मूल्यवान रत्न

उपहार के रूप में उसें भेंट करके वह बोला, "वणिक्‌श्रेष्ठ, आप जैसे धनाढ्य पुरुष चाहें तो कोई भी कार्य संभव हो सकता है । आप राजा से बात कर के सौवीर-राज्य पर हमला करने से उन्हें रोकिये । हम यथाशक्ति आप के इस उपकार का ऋण चुकायेंगे । हम पुनः यथासंभव आप को पुरस्कार प्रदान करेंगे ।"

भविष्य में प्राप्त होनेवाले पुरस्कारों के लालच में आकर धनगुप्त ने सृजनशर्मा की बात मान ली ।

इसके बाद सीमापर पड़ाव डाले सैनिक शिबिर में सृजनशर्मा पहुँचा और उसने एकान्त में सेनापति माधववर्मा से मुलाकात की । सेनापति धनगुप्त जैसा लालची नहीं; वह किसी प्रलोभन में फँसनेवाला नहीं है—यह बात सृजनशर्मा अच्छी तरह जानता था । इसलिये माधववर्मा को देखते ही उसने प्रशंसात्मक शब्दों में कहा, "मैं महावीर माधववर्मा को अभिवादन करता हूँ । क्या एक चिड़िया पर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करना उचित है?"

"आप अपनी बात स्पष्ट कहिये, ताकि मैं ठीक ठीक समझ सकूँ ।" माधववर्मा ने कहा ।

शर्मा का दिल कचोट उठा, फिर भी उसने बहुत ही विनयपूर्वक निवेदन किया, "आप जैसे पराक्रमी सेनापति के लिए हमारे छोटे से सौवीर राज्य को पराजित करना बायें हाथ का खेल है, परन्तु इस से आप का यश तो नहीं बढ़ेगा । उधर चेदि राजा के अहंकार की कोई सीमा नहीं है । ऐसे राजा को पराजित करने पर आप को अपार यश के साथ अतुल संपत्ति

भी हाथ लग सकती है ।"

इस प्रकार की स्तुतिपूर्ण बातों से माधववर्मा को मनाकर सृजनशर्मा मंत्री सोमशेखर से मिलने गया ।

मन्त्री सोमशेखर मूर्ख था और अपनी प्रशंसा सुनकर फूलनेवाला था । शाम के समय वह अपनी पत्नी व बच्चों के साथ अपने भवन की फुलवारी में टहल रहा था । सृजनशर्मा ने ठीक उसी समय वहाँ पहुँच कर मन्त्री को प्रणाम करके कहा, "महामन्त्री, इस सारे राज्य में आप की समता कौन कर सकता है? आप वैसे राजा न सही, मगर पूरे राज्य का शासन तो आप ही चलाते हैं न! बहुत से लोग यह भी जानते हैं कि आप की बात खुद महाराज भी नहीं टाल सकते!"

सृजनशर्मा की बात साधने की अपनी असमर्थता पत्नी व बच्चों के सामने व्यक्त करे, तो अपना अपमान होगा यह समझकर मन्त्री ने सृजनशर्मा की बात मान ली ।

दूसरे दिन दरबार में सृजनशर्मा राजा से मिला । उसने प्रारम्भ में अपना परिचय नहीं दिया और अपनी कविता द्वारा राजा को प्रसन्न किया ।

"कविवर, आप जो कामना करते हैं, माँग लीजिये ।" राजा ने शर्मा की कविता पर मुग्ध होते हुए कहा ।

"प्रभु, क्षमा कीजिये । मैं सौवीर देश का राजदूत हूँ ।" यह कहकर उसने युद्ध के कारण उत्पन्न होनेवाले दुष्परिणामों का परिचय दिया; और शान्ति-भिक्षा की याचना की ।

मत्स्य-देश के राजा ने पण्डित की बात मान ली और उसको सादर सौवीर भिजवाने का इन्तज़ाम किया ।

सृजनशर्मा जब सौवीर राज्य में पहुँचा, तब राजा ने आदर पूर्वक उसका आलिंगन किया और उसका अपूर्व सत्कार किया ।

सौवीर राजा ने शर्मा के मुँह से सारा वृत्तान्त सुनकर समझ लिया, कि लालची को धन के द्वारा, कठिन चित्तवाले को विनय से, मूर्ख को प्रशंसा से और विद्वान को सत्य वचनों से अपने अधीन कर सकते हैं ।

चंदामामा पुरवणी

ज्ञान का ख़ज़ाना

संसार के आश्चर्य

रोम का कलोसियम

रोम के इस विशाल प्रेक्षागार में—जिसकी इमारत आज के आधुनिक स्टेडियम जैसी है—चालीस से पचास हज़ार तक लोग बैठ सकते थे । नीरो के 'गोल्डन हाऊस' नाम से प्रसिद्ध राजभवन के स्थान पर ही यह बाँधा गया है ।

इसा की पहली शताब्दि में इस कलोसियम का उद्‌घाटन हुआ था । रोम के राजघराने के लोग यहाँ प्रेक्षणीय खेल देखने का आनन्द लूटते थे । रथस्पर्धा में लोग यहाँ एक दूसरे से लड़ते थे । मानव कैदियों पर यहीं शेर व बाघ जैसे खूँख्वार जानवर छोड़े जाते थे । बहुशः सारे कार्यक्रम रक्तरंजित और भयानक होते थे । कलोसियम के प्रभावशाली अवशेष आज भी वहाँ मौजूद हैं ।

सर नीचे

सूचनाएँ:

चित्र में दिखाए अनुसार एक हथौड़े को एक यार्ड-पट्टी के साथ टेप से बाँध दीजिए और इस पट्टी को मेज़ की कोर पर रख दीजिए। ग्रार्ड-पट्टी का बहुतेरा हिस्सा मेज़ के ऊपर होगा और हथौड़े का सर कोर के नीचे। हथौड़ा-यार्डपट्टीवाली यह असेम्ब्ली संतुलित स्थिति में रखिए।

इसके बाद यार्ड-पट्टी के दोनों सिरों पर थोड़ा दबाव देकर देखिए क्या होता है।

क्या होता है और क्यों?

साधारणतः असेम्ब्ली अपनी संतुलित अवस्था में आ जाएगी। लेकिन अगर हथौड़ेवाले सिरे को बहुत दूर तक दबाया तो असेम्ब्ली गिर पड़ेगी। चाहे जो हो असेम्ब्ली का अधिक-से-अधिक वज़न मेज़ की कोर के नीचे ही होता है, जो उसे नीचे खींचता है। और जब असेम्ब्ली के किसी सिरे पर दबाव डाला जाता है, तो लटकनेवाला वज़न इधर-उधर हिलता है। जब ऐसा होता है, तो हथौड़े के सर का वज़न और सिरे पर पड़ा दबाव मिलकर असेम्ब्ली को मेज़ की कोर पर से अधिक ज़ोर से नीचे खींचते हैं। पर जब दबाव निकाल दिया जाता है, तब हथौड़े का सर फिर ऊपर उठता है और अपनी पूर्व-स्थिति में आ जाता है। क्या ऐसा नहीं होता? खुद प्रयोग करके देखिए।

असेम्ब्ली का संतुलन अधिक आसान कब होता है? हथौड़े के सर का वज़न मेज़ की कोर के नीचे होता या ऊपर? अगर आप निश्चय बता नहीं सकते तो क्यों नहीं ढूँढ़ निकालते?

या हथौड़े को यार्ड-पट्टी के साथ किसी और प्रकार बाँध दे सकते हैं, ताकि असेम्ब्ली का संतुलन उतना ही सरलता से हो?

१. कुंभमेला कहाँ कहाँ लगता है?

२. किसने हिमालय को 'देवात्मा' कहा?

३. व्हिएत नाम में बसे भारतवासियों द्वारा स्थापित राज्य का नाम क्या था?

४. इस राज्य की स्थापना कब हुई थी?

५. वह कब तक टिका?

६. कौन से देश के राजा आज तक 'राम' की उपाधि से भूषित हैं?

७. इंडियन नेशनल कांग्रेस के पहले अध्यक्ष कौन थे?

८. उसका पहला अधिवेशन कहाँ हुआ था?

९. कौन पारसी देशभक्त इंडियन नेशनल कांग्रेस के दूसरे अध्यक्ष बने?

१०. १९७९ ईसवी में इंडियन नेशनल कांग्रेस कितने सालकी हुई?

अपना सामान्य ज्ञान आजमाएँ

१. 'नोबेल प्राईझ' कबसे शुरू हुआ ।

२. उसके संस्थापक का पूरा नाम बताइये ।

३. वह कौनसे देश का निवासी था?

४. वह किसलिये प्रसिद्ध था?

५. आज उपयोग में आने वाला सबसे बड़ा राजभवन कौनसा है?

६. स्पुटनिक २ में जानेवाले कुत्ते का नाम क्या था?

७. स्पुटनिक १ व २ कौनसे साल में अवकाश में छोड़े गये?

८. रूसी अवकाशयानों की दूसरी धारा का नाम क्या है ।

९. हिमालय की कांचनगंगा चोटी किसने व कब जीती?

१०. माउंट एवरेस्ट किसने व कब जीता?

पृष्ठ ३६ देखिये

सभी भारतीय भाषाओं का एक शब्द सीखें

—सिर—

संस्कृत: शीर्ष, मस्तक; **हिन्दी और पंजाबी**: सिर; **उर्दू**: सर; **काश्मिरी**: हीर; **सिन्धी**: माथो; **मराठी**: डोके; **गुजराती**: माथू; **बंगाली**: माथा; **आसामी**: मुर; **उरिया**: मुंडा, माथा; **तेलुगु और मलयालम**: तल; **तमिळ**: तलै; **कन्नड़**: तले

आप विश्वास करते हैं?

१. कि सब से बड़ी पाठशाला पश्चिम में कहीं है?
२. कि सब से महँगे महाविद्यालय यू. एस. ए. में हैं?
३. कि सब से विशाल सिनेगोग (ज्यू मन्दिर) इस्राइल में है?

ना, ना ।

१. वह तो 'साउथ पाइंट स्कूल, कलकत्ता' है ।
२. स्वित्झर्लण्ड में ।
३. न्यूयार्क शहर में, मन्दिर इमान्यू-एल ।

उत्तरावलि

इतिहास

१. नासिक व उज्जैन में हर तीसरे साल और प्रयाग व हरिद्वार में हर बारहवें साल ।
२. कालिदास ।
३. चम्पा ।
४. ईसवी की दूसरी शताब्दि में ।
५. १५ वीं शताब्दि तक ।
६. थायलंड ।
७. डब्ल्यू.सी.बेनर्जी ।
८. बंबई ।
९. दादाभाई नौरोजी ।
१०. ११४ साल, उसकी स्थापना १८७५ में हुई थी ।

सामान्य ज्ञान

१. १९०१ में ।
२. आलफ्रेड नोबेल ।
३. स्वीडन ।
४. डायनामाइट ईज़ाद करने के लिये ।
५. वेटिकन (इटली) ।
६. लायका ।
७. १९५७ ।
८. ल्युनिक १, २ और ३ ।
९. डॉ. चार्लस ईव्हान के नेतृत्व में यू.के.के एक दल ने १९५५ में ।
१०. २९ मई १९५३ में, एडमण्ड हिल्लरी और शेर्पा तेनसिंग ने ।
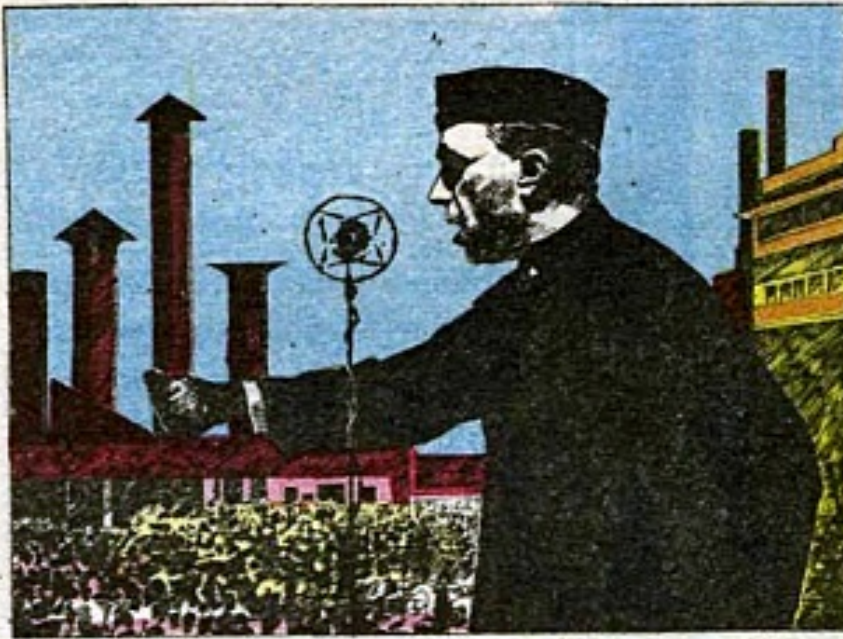
नेहरू की कहानी - ९

सन १९२९ में झरिया में जो समारोह हुआ, उसमें पं. जवाहरलाल नेहरू ट्रेड-यूनियन काँग्रेस के अध्यक्ष चुने गये। इससे उन्हें भारतीय मज़दूरों के साथ निकट संबंध स्थापित करने का अवसर मिला।

इसके बाद लाहोर काँग्रेस के अधिवेशन में पं. नेहरू भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। तब उनकी आयु केवल चालीस साल की थी। काँग्रेस के अध्यक्ष-पद के लिए महात्मा गांधीजी ने मोतीलाल के बाद जवाहरलाल का नाम प्रस्तावित किया था।

लाहोर के अधिवेशन में ही सब लोगों ने पहली बार पठान नेता खान अब्दुल गफ़ार को देखा था। सीमा प्रान्त के अनेक नौ-जवानों के साथ इस अधिवेशन में जिस उत्साह के साथ उन्होंने भाग लिया था, उससे सब उनकी ओर आकर्षित हुए।

कॉंग्रेस ने एक प्रस्ताव पास किया कि २३ जनवरी १९३० 'स्वतंत्रता-दिवस' माना जाए । उस दिन देश के सभी प्रमुख नेताओं ने जनता को समझाया कि देश की स्वतंत्रता ही हमारा एकमात्र लक्ष्य है । इन समारोहों में असंख्य लोगों ने बड़े उत्साह से भाग लिया था ।

उसी वर्ष ब्रिटिश सरकार ने नमक पर कर लगाया । महात्मा गांधीजी ने उसका विरोध करके नमक सत्त्याग्रह का आवाहन किया । अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से गांधीजी ने प्रसिद्ध दांडी-यात्रा का शुभारंभ किया । इस यात्रा ने सारे देश में एक अपूर्व हलचल मचा दी ।

समूचे देश में अनेक स्थानों पर जनता ने नमक-कानून तोड़ कर समुद्र के किनारे तथा अन्य स्थानों पर भी गैर-कानूनी नमक बनाया । पं. जवाहरलाल नेहरू ने भी अपनी पत्नी कमला नेहरू के साथ नमक-सत्त्याग्रह में हिस्सा लिया ।

१४ अप्रैल १९३० को पं. नेहरू रेलगाड़ी पर सवार हो रहे थे, कि सरकारी पुलिस ने उनको क़ैद किया । इस पर जनता में तीव्र असंतोष फैल गया । सारे देश भर में सत्याग्रह की लहर उमड़ पड़ी ।

पं. नेहरू ने सोचा कि उनके जेल में रहते काँग्रेस की अध्यक्षता की ज़िम्मेदारी महात्मा गांधी अपने ऊपर लें तो अधिक योग्य होगा । पर उनको लगा कि गांधीजी उनकी यह प्रार्थना स्वीकार नहीं करेंगे, उन्होंने अपने पिता को अध्यक्ष बनाया । पं. मोतीलालजी ने अस्वस्थ होते हुए भी अपने पुत्र की ज़िम्मेदारी सम्हाल ली ।

इन्हीं दिनों कई नगरों में विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार और असहयोग आंदोलन एक साथ शुरू हुए । शारीरिक अस्वास्थ्य के बावजूद श्रीमती कमला नेहरू ने कड़ी धूप की परवाह न करते हुए जहाँ-तहाँ सत्याग्रह आंदोलन का नेतृत्व किया ।
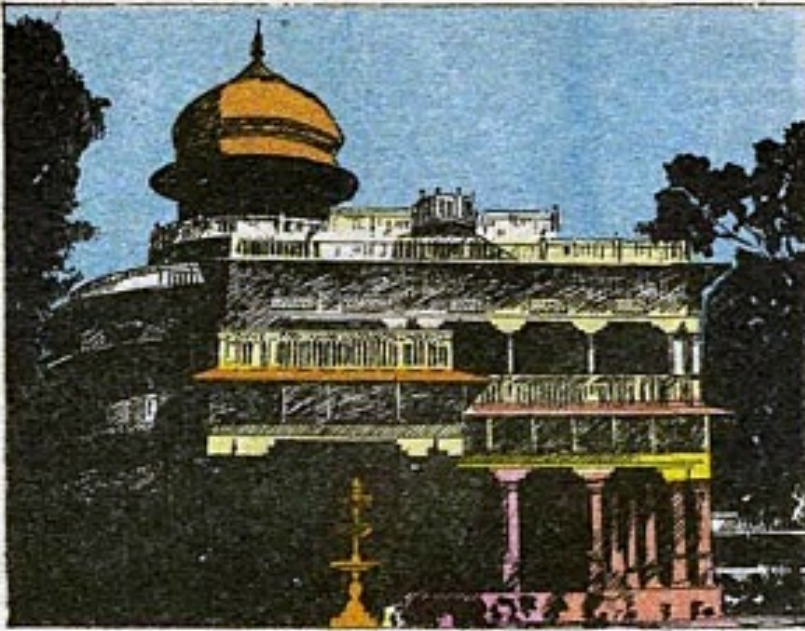
पं. मोतीलालजी ने निश्चय किया कि इलाहाबाद का उनका निवासस्थान 'आनन्द-भवन' देश को समर्पित किया जाय । उसका नाम रखा गया 'स्वराज्य भवन'! उनका विचार था कि भवन का अधिकांश हिस्सा काँग्रेस के कार्यक्रमों का केन्द्र बन जाए और शेष हिस्सा चिकित्सालस के लिए सुरक्षित रखा जाए ।

इसके बाद वे बीमार हो गये । एक दिन वे मसूरी जाने की तैयारियाँ कर रहे थे, कि सुबह के समय पुलिस ने घर में प्रवेश करके उनको गिरफ्तार किया । पिता-पुत्र दोनों को नैनी में रखा गया ।

जेल में वृत्ताकार दीवारों वाले दो कमरों में पं. जवाहरलाल को रखा गया था । वहाँ से वे आकाश का थोड़ा-सा हिस्सा मात्र देख सकते थे । स्वतंत्रता के संकेत के रूप में दिखाई देनेवाले उस आकाश की ओर वे जब-तब देख लिया करते थे ।

(सशेष)

सलाहों की बिक्री

कई सौ साल पहले किसी गाँव में एक विचित्र दूकान थी । वह 'सलाहों की दूकान' कहलाती थी । धर्मपाल नाम का एक सज्जन यह दूकान चलाता था । उसने एक एक चिट पर एक एक सलाह लिख रखी थी; और जो जितनी सलाहों की माँग करता, उतनी उसे बेचता था । एक एक सलाह की कीमत एक सौ रुपये थी । चिट खरीदनोंवाले उनमें लिखी सलाहों का पालन करके लाभ उठाया करते थे । अब तक कई लोगों को इन सलाहों से बहुत फायदा हुआ था। दिन-ब-दिन उसका यह व्यवसाय बढ़ता जा रहा था । जाने कहाँ कहाँ से लोग सलाह खरीदने के लिए उसके पास आन टपकते!

एक दिन दूकान पर एक सेठ आ पहुँचा । वह बड़ा धनवान था । उसने धर्मपाल की कीर्ति बहुत सुनी थी । इस लिए वह भी उसकी सलाहों से फायदा उठाना चाहता था । उसने 'सलाहों की दूकान' से तीन सौ रुपये देकर तीन सलाहें खरीद लीं । वे सलाहें थीं—

"यात्रा पर जाते समय पत्नी को विवरण बताना नहीं चाहिये ।"

"रास्ते में अगर भोजन करना है, तो रास्ते के समीप में खाना नहीं खाना चाहिये ।"

"जल्दबाजी में आकर किसी से किसी भी बारे में दाँव नहीं लगाना चाहिये ।"

ये सलाहें खरीदकर सेठ अपने घर पहुँचा । इन सलाहों का ठीक ठीक अर्थ जानने का कुतूहल सेठ के मन में पैदा हुआ । अपनी पत्नी से कुछ कहे बगैर उसने नौ थैलियों में नौ हज़ार रुपये भर लिये और किराये की एक गाड़ी तय करके शहर में व्यापार करने के लिये वह चल पड़ा ।

थोड़ी दूर तक प्रवास करने के बाद भोजन का समय हो गया । रास्ते से थोड़ी दूर उसको

२५ वर्षपूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

एक कुआँ दिखाई दिया । उसने गाड़ी रास्ते में रुकवा दी और कुएँ के पास बैठकर खाना खाकर फिर वह यात्रा पर चल पड़ा । थोड़ी दूर जाने पर उसने थैलियाँ गिनकर देखीं, तो नौ की जगह उसे केवल आठ ही थैलियाँ मिली! कुएँ के पास जाकर उसने ढूँढ़ा तो खोयी हुई थैली उसे वहीं पड़ी मिल गयी । धन देकर उसने जो सलाहें खरीदीं थीं, उनमें से एक कारगुज़र साबित हुई । इस पर सेठ बहुत प्रसन्न हुआ । उसने यदि रास्ते में खाना खा लिया होता, तो वहाँ पड़ी थैली राह चलनेवाला कोई ज़रूर उठा कर ले जाता!

सेठ थैली लेकर गाड़ी के समीप आ रहा था, कि उसके पैर से कचरे में पड़ा एक फल टकरा गया । आश्चर्य की बात हुई, कि बहुत दिनों से उसके पैर को सताता आया हुआ एक फोड़ा फल से टकरा कर इस तरह गायब हुआ, मानो कोई जादू हो गयी हो! सेठ ने सोचा कि उस फल में ज़रूर कोई औषधी गुण है । इसलिये वापसी यात्रा में अपने साथ ले जाने के विचार से सेठ ने उस फल को कुएँ के समीप एक जगह गाड़ दिया और पहचान के लिये एक चिन्ह रखा । इतना करने के बाद अपनी यात्रा के लिये वह आगे बढ़ा ।

शहर में उसका व्यापार खूब अच्छा चला । काफी धन उसने कमाया; मगर उस फल की बात भूलकर दूसरे ही रास्ते से अपने गाँव लौट आया ।

गाँव में पहुँचते ही उसे समाचार मिला, कि उस गाँव का लखपति किसी विष-व्रण से परेशान है और उसने इस आशय का ढिंढ़ोरा पिटवाया है, कि जो उसे स्वस्थ बना देगा, उसे दस हज़ार रुपयों का इनाम दिया जाएगा । कई लोग प्रयत्न करके असफल रह गये थे । यह ख़बर मिलते ही सेठ को अपने छिपाये उस फल का स्मरण हुआ । उस फल के स्पर्श से लखपति का ज़हरभरा फोड़ा ठीक हो सकेगा और साथ ही उसे वह दस हज़ार का इनाम भी मिलेगा । इस खुशी में वह अपनी खरीदी हुई सलाहों की बात भूल गया और उसने अपनी पत्नी को कचरे में प्राप्त उस फल का महत्त्व तथा उसका प्रयोग करनेपर लखपति से प्राप्त होनेवाले दस हज़ार के इनाम की बात बता दी । फिर उसने कहा—"मैं अभी जाकर लखपति से इनाम की बात कागज़ पर लिखवा

कर लौट आता हूँ, कल जाकर वह फल ले आऊँगा ।''

सेठ की पत्नी ने दूसरे ही पल यह वृत्तान्त अपनी पड़ोसन को सुना दिया । पड़ोसन ने अपने पति को यह ख़बर सुनाई । सेठ जब लखपति के घर जा रहा था, तब रास्ते में उसका वह पड़ोसी उसे मिला । वार्तालाप के सिलसिले में यह बात खुली, कि दोनों एक ही काम पर जा रहे हैं ।

''लखपति का फोड़ा कैसे ठीक हो सकता है, इसका रहस्य केवल मैं ही जानता हूँ ।'' सेठ ने कहा ।

''वह रहस्य तो मैं भी जानता हूँ ।'' पड़ोसी ने कहा ।

''तुम लखपति के फोड़े को चंगा नहीं कर सकते ।'' सेठ ने चुनौती दी ।

''मैं ज़रूर चंगा कर सकता हूँ । चाहे जो दाँव लगाओ ।'' पड़ोसी ने कहा । सेठ ने खरीदी सलाहों की बात भूल कर दाँव लगाया, कि यदि पड़ोसी लखपति को चंगा करेगा, तो वह उसके घर की जिस चीज़ को सर्वप्रथम स्पर्श करेगा, वह चीज़ उसे दी जाएगी ।

पड़ोसी उसी दिन शाम को निकल कर कुएँ के पास पहुँचा और उस ने सेठ का छिपाया फल हासिल कर लखपति का फोड़ा नष्ट कर दिया ।

सेठ अभी घर से निकला भी नहीं था, कि इस बीच यह सब हो गया । शर्त के अनुसार यदि उसका पड़ोसी सर्वप्रथम उसकी तिज़ोरी को स्पर्श करे तो क्या होगा?—सेठ को अब यही चिन्ता सताने लगी । उसकी सारी संपत्ति तो तिज़ोरी के भीतर ही पड़ी है ।

उसने सलाहों का ठीक से पालन नहीं किया, इसी कारण अब यह ख़तरा पैदा हो गया है । उसने वह औषधी फल लाने जाने की बात अपनी पत्नी को सुनायी; इतना ही नहीं, जल्दबाजी में आकर उसने अपने पड़ोसी के साथ दाँव भी लगाया ।

फिर क्या था! सेठ दौड़कर सलाहों की दूकान पहुँचा और धर्मपाल के पैरों पर गिरकर सारी कहानी उसे सुना दी । अन्त में उसने धर्मपाल की इस विपदा से बचाने की मिन्नत की ।

धर्मपाल ने सारा वृत्तान्त सुनकर समझाया, ''सुनो, जो कुछ हुआ, सो हो गया । अब घर जाकर तुम अपनी तिज़ोरी अटारी पर चढ़वा दो और पड़ोसी के तुम्हारे घर पहुँचने से पहले अटारीवाली दीवार से सटाकर एक सीढ़ी खड़ी कर रखो । मैं भी ठीक वक्त वहाँ पहुँच जाऊँगा ।''

जब सब लोगों के कानों तक यह दाँववाली बात पहुँची, तब सारा तमाशा देखने लोग सेठ के मकान के सामने खड़े हुए, कि देखे पड़ोसी अपने दाँव की वसूली कैसे करता है । उसी शाम को अपने जान-पहचान के दस-बारह प्रमुख व्यक्तियों को साथ लेकर पड़ोसी ने सेठ के घर के अहाते में प्रवेश किया । उसने इधर उधर झाँक कर देखा, पर तिज़ोरी कहीं दिखाई नहीं दी । बाद में उसने अटारी पर रखी तिज़ोरी देखी और सब से पहले तिज़ोरी को ही स्पर्श करने के विचार से वह सीढ़ीपर चढ़ने गया और सर्वप्रथम उसने सीढ़ी को पकड़ा ।

''सेठजी, आप के पड़ोसी ने पहले पहल सीढ़ी को ही स्पर्श किया है, अब यह सीढ़ी तुम्हारी नहीं । पड़ोसी महाशय इस दाँव में तुम ही हार गये हो ।'' धर्मपाल ने लोगों में से आगे आते हुए कहा ।

धर्मपाल की बात पर पड़ोसी ने आपत्ति उठायी । मगर वहाँ इकठ्ठा सब लोगों ने एक स्वर में कहा, ''धर्मपाल का कथन सर्वथा न्यायसंगत है ।''

धर्मपाल की कृपा से सेठ भारी नुकसान से बच गया ।

उषा अनिरुद्ध के चित्र की ओर एक टक देख रही थी, उसका सारा शरीर पुलकायमान हो उठा देख सखी चित्ररेखा मुस्कुराती हुई कहने लगी—"उषा, मैं समझ गई, तुमने सपने में किस को देखा है । वह चाहे जहाँ हो, मैं उसे ढूँढ़ लूँगी और तुम्हें सौंप दूँगी । तुम्हें जो करना है, करो । तुम्हें पार्वती देवी का आशीर्वाद प्राप्त है । मुझे ज़रा भी शंका नहीं है कि मैं अपने अंगीकृत कार्य में अवश्य सफल हूँगी ।"

उषा ने बड़े संतोष के साथ चित्ररेखा से कहा—"सखी चित्ररेखा, चित्रकला में तुम्हारा कौशल मैं नहीं जानती थी । तुम यथार्थनाम्नी हो! तुमने यह चित्र यों सजीव अंकित किया है कि इस चित्र को देख कर मेरे मन में वे सारे भाव ज्यों-के-त्यों उद्दीप्त हुए, जैसे मेरे सपने में! ये किस वंश के हैं? इनका नाम क्या हैं? इनका स्वभाव कैसा है? और ये क्या करते हैं? पूरा-पूरा परिचय दो न मुझे! इस परिचय के बिना मैं व्याकुल हुई जा रही हूँ । जब उनका संपूर्ण परिचय प्राप्त होगा, तभी मेरे मन को शांति मिलेगी ।"

उषा की उत्सुकता देख कर चित्ररेखा ने कहा—"द्वारकाधीश श्रीकृष्ण के बारे में तुमने सुना ही होगा । कहते हैं कि शिवजी के तृतीय नेत्र की अग्निज्वाला में भस्मीभूत हुए कामदेव ही श्रीकृष्ण के प्रद्युम्न नामक पुत्र के रूप में पैदा हुए हैं । सखी, यह नवयुवक उन्हीं प्रद्युम्न का पुत्र है । इसका नाम है अनिरुद्ध । इस का पराक्रम विश्व-विख्यात है । यह युवक अगर तुम्हारा पति बन गया, तो आदिशेष भी तुम्हारे सौभाग्य की प्रशंसा

करने में असमर्थ सिद्ध होंगे ।

हमारे इस शोणपुर के समान द्वारका नगर में भी चाहे जो प्रवेश नहीं कर सकता । फिर भी तुम्हारी खुशी की खातिर मैं कोई न कोई उपाय ढूँढ़कर वहाँ पहुँच जाऊँगी और तुम्हारे प्रियतम को यहाँ ले आकर तुम से मिलाऊँगी । चिन्ता मत करना । लो, मैं द्वारका जाने के लिए तैयार हो रही हूँ । शीघ्र ही कार्य सफल करके लौटूँगी ।"

"तुम बड़ी कार्य-कुशल हो और योग-विद्या भी तुम्हें अवगत है । कामरूप तथा कामगमन शक्तियाँ तुम्हारे पास हैं । तुम असंभव कार्य को भी संभव बनाने की क्षमता रखती हो । मैं अनिरुद्ध को प्रत्यक्ष न देखूँगी तो ज़िंदा नहीं रह सकती । तुम शीघ्र जाकर उन्हें ले आओ और मेरे प्राणों की रक्षा करो । अभी सात दिनों तक तो मैं सहन करती रही, आगे एक घड़ी भी सहन न कर सकूँगी । इस लिए तू अपना काम शुरू कर ।" उषा ने अपने अंत:करण की व्यथा प्रकट की ।

चित्ररेखा ने उषा को आलिंगन देकर कहा—"तुम अपनी अन्य सखियों के साथ दिल बहलाती रहो । मैं चली, शीघ्र ही आऊँगी ।" चित्ररेखा आसमान में उड़कर अदृश्य हो गई । फिर मनोवेग के साथ क्षण भर में द्वारका पहुँची और अपने करणीय कार्य के बारे में विचार करने लगी । उसी समय एक सरोवर के पास उसे नारद के दर्शन हुए । चित्ररेखा नारद के पास गई और आदर के साथ प्रणाम किया ।

नारद ने चित्ररेखा को आशीर्वाद देकर मुस्कुराते हुए पूछा—"क्यों? यहाँ पर कैसे आना हुआ?"

चित्ररेखा ने नारद को बताया कि पार्वती देवी के आशिर्वाद के अनुसार उषा ने सपने में अनिरुद्ध को देखा, और अभी वह अनिरुद्ध को अपने साथ ले जाकर उषा से मिलाना चाहती है । फिर उसने नारद से निवेदन किया—"अगर मैं अनिरुद्ध को अपने साथ ले जाऊँ, तो श्रीकृष्ण क्रोधित तो नहीं हो जाएँगे? आप जाकर श्रीकृष्ण को सारा वृत्त कह दें, तो मेरा काम बहुत आसान होगा । मैं जानती हूँ कि अगर बाणासुर और श्रीकृष्ण के बीच युद्ध होगा तो उसमें श्रीकृष्ण की ही विजय होगी । इस समय मैं श्रीकृष्ण के पोते को

अपने साथ ले जाना चाहती हूँ । मुझे डर है कि कहीं श्रीकृष्ण क्रोधित हो मुझे शाप न दे बैठें । आप कृपया मुझे श्रीकृष्ण के भय से मुक्त कर दीजिए, तो मेरी सखी उषा की कामना-पूर्ति होगी ।''

नारद ने चित्ररेखा को तामसी नामक विद्या का उपदेश देकर समझाया — ''इस विद्या के द्वारा तुम्हारा कार्य संपन्न होगा । चिन्ता मत करो । तुम अनिरुद्ध को ले जाओगी, तब बाण के साथ युद्ध होगा । उस समय मैं वहाँ पहुँच कर युद्ध को रोक दूँगा ।'' यों समझाते हुए नारद अपने रास्ते चले गये ।

अब चित्ररेखा अदृश्य रूप में श्रीकृष्ण और प्रद्युम्न के भवनों को पार करती हुई अनिरुद्ध के कक्ष में पहुँच गई । सुवर्ण-पात्रों में मधु भरकर उसका सेवन करते हुए कई स्त्रियों के बीच बैठ हुए अनिरुद्ध को उसने देखा । अनिरुद्ध के मनोविनोद के लिए कई सुंदरियाँ नृत्य-गान कर रहीं थीं । पर अनिरुद्ध कुछ उदास-सा लग रहा था । चतुर चित्ररेखा इसका कारण समझ गई । अगर वह हँस भी देता तो उसमें कृत्रिमता की झलक दिखाई देती थी । अगर वह वार्तालाप करता, तो उसके शब्द गद्गद स्वरों में बाहर पड़ते । उसकी प्रत्येक हलचल में कुछ निराशा नज़र आ रही थी ।

चित्ररेखा सोचने लगी — ''कहीं इसने भी उषा के समान सपना तो नहीं देखा है ? इसको आकर्षित करनेवाली सुंदरी उषा को छोड़ कर और कौन हो सकती है ? यह सब पार्वती देवी के अनुग्रह के कारण ही हो सकता है अवश्य ।''

अगर आप उदारतापूर्वक स्वीकार करें तो मैं आपको अपने साथ ले जाना चाहूँगी । आप दोनों एक दूसरे को पाने के लिए ही मानो पैदा हुए हैं । मुझे इसमें ज़रा भी संदेह नहीं है । अब पता नहीं ईश्वर की क्या इच्छा है । ये होनेवाली सभी घटनाएँ पार्वती ने उषा को पहले ही बता दी हैं । मैंने आपका चित्र बनाकर उषा के सामने धर दिया, तब से उसके मन में आपको पाने की तीव्र इच्छा जागृत हुई है । अन्यथा न मालूम सखी उषा का क्या हाल हो जाता । अनेक सुंदरियों के आसपास रहते आपकी बात और है! आप ही के लिए व्याकुल सखी उषा की रक्षा आप ही कर सकते हैं । मैं आप से प्रार्थना करती हूँ कि आप मेरे साथ चलने का कष्ट करें ।"

उसके मन में अनिरुद्ध के साथ बात करने की इच्छा हुई । नारद ने उसको जो विद्या प्रदान की थी, उसका उपयोग करके उसने अनिरुद्ध के आसपास के सभी लोगों को बेहोश बना दिया और फिर अनिरुद्ध के सामने जा खड़ी हुई । नम्रतापूर्वक प्रणाम करके बोली—"बली चक्रवर्ती के पुत्र बाण को पार्वती देवी के अनुग्रह से एक पुत्री हुई । उसका नाम है—उषा । उषा त्रिलोक-सुंदरी है । साक्षात् ब्रह्मा भी उसके सौंदर्य का वर्णन नहीं कर सकते, ऐसी हालत में उस सुंदरता के बारे में मैं भला क्या कहूँ? उस युवती उषा ने एक रात सपने में आपके दर्शन किये । तब से यह आपके साथ विवाह करने के लिए अत्यन्त व्याकुल है । मैं हूँ उसकी सखी चित्ररेखा

चित्ररेखा की सभी बातें अनिरुद्ध ने सुन लीं । फिर अपनी बात कही—"बहन चित्रेखा, मैं अपनी बात तुमसे कैसे कहूँ? सखी उषा ने जो सपना देखा, वही मैंने भी इधर देखा है । तब से मेरा हाल भी विचित्र-सा हो गया है । मुझे दिन और रात का भान नहीं रहता । ज़रा भी नीन्द नहीं आती । तुम मेरे लिए भाग्यदेवी बन कर आई हो, वरना मेरी समझ में नहीं आता था कि क्या करूँ! तुम्हें मेरी प्रार्थना करने की बिलकुल आवश्यकता नहीं है । तुम कृपा करके मुझे सखी उषा के पास ले चलो, मैं चलने के लिए तैयार हूँ ।"

अब चित्ररेखा को बहुत प्रसन्नता हुई । अनिरुद्ध का हाथ पकड़ कर वह आसमान में

उड़ी और अपने समान अनिरुद्ध को भी अदृश्य बनाया। कुछ ही क्षणों में दोनों शोणपुर में उषा के महल में पंहुँच गये।

उषा और अनिरुद्ध ने परस्पर एक दूसरे को प्रत्यक्ष देख लिया। दोनों आनंद-सागर में डूबने-उतरने लगे।

"लो सखी, ये ही तुम्हारे प्रियतम हैं। मुझे प्रसन्नता है कि मैं अपने वचन का पालन कर सकी। अब तुम इनका पाणिग्रहण करो। राज-परिवारों में गांधर्व-विवाह अनुचित नहीं है। तिस पर भी पार्वती देवी का अनुग्रह तुम्हें प्राप्त है। इस क्षण से तुम दोनो पति-पत्नी हो।" इतना निवेदन कर चित्ररेखा ने उषा को आलिंगन दिया और दोनों को नये वस्त्र, आभूषण तथा पुष्पमालाएँ दीं। आनिरुद्ध ने उषा का हाथ अपने हाथ में लेकर प्राणि-ग्रहण किया।

कोई एक मानव बाण के महान् पराक्रम की परवाह किए बिना उसके महल में प्रवेश कर गया है और उसके वंश के माणिक के समान पुत्री उषा के साथ प्रणयाराधन कर रहा है, यह जानकर बाण अत्यन्त क्रोधित हो उठा।

उसने तुरन्त पहरेदारों को आदेश दिया—"अभी जाकर तुम लोग उस दुष्ट को बन्दी बनाओ। वह कहीं भागने न पाए। मेरा अपमान करके देवत्ता भी अपने प्राणों को बचा नहीं सकते।

उसी समय हज़ारों राक्षस तलवार और भाले लेकर उषा के अंत:पुर के इर्द-गिर्द जमा हो गये। अनिरुद्ध ने महल के ऊपर से यह सारा दृश्य देखा, कोलाहल को सुना। उषा के

मुस्कुराते हुए अनिरुद्ध ने उषा को दिलासा दिया—"पगली, रो क्यों रही हो? मेरे साहस और पराक्रम को तुम जानती नहीं हो। तुम्हारे पिता के सैनिक बल की बात मत करो। शिवजी स्वयं अपने प्रमद बाणों के साथ आवे, तब भी मैं उन पर विजय प्राप्त कर सकता हूँ। मैं अपने शत्रुओं को मुठ्ठियों से मारकर उन्हें खून से लथ-पथ बनाकर शोणपुर में खून की नदी बहा सकता हूँ। इस तरह शोणपुर का नाम सार्थक होगा। तुम खिड़की के पास खड़ी हो बस देखती रहो। इस तरह व्याकुल होने की बिलकुल आवश्यकता नहीं है।"

महल को घेर कर राक्षस-सेवक ज़ोर ज़ोर से चिल्ला रहे थे। अनिरुद्ध तुरन्त ही सिंह के समान उनसे लड़ने के लिए तैयार हो गया।

उषा आँखों में आँसू भरकर अनिरुद्ध के पास जा खड़ी हुई और निवेदन किया—"मैं एक ऐसा कार्य कर बैठी हूँ, जो मुझ जैसी कन्याओं को नहीं करना चाहिए। मैं कुल-कलंकिनी बन गई हूँ। एक अनमोल रत्न के समान राजकुमार को मैंने उलझन में डाल दिया। लगता है, जगदंबा द्वारा प्राप्त वरदान भी व्यर्थ सिद्ध होनेवाला है। समझ में नहीं आता कि क्या करूँ? हे मेरे भाग्य-देवताओं, इस विपदा से अब मुझे कौन बचाएगा?" उषा ने विलाप करना प्रारंभ किया।

उषा को यों सान्त्वना देकर अन्तःपुर के द्वार के निकट रखी गदा हाथ में लिये अनिरुद्ध राक्षसों पर टूट पड़ा। उस समय नारद प्रवेश करके आसमान में खड़े हो युद्ध का तमाशा देखने लगे।

सभी राक्षसों ने अकेले अनिरुद्ध पर बाण, गदा तथा अन्य सभी उपलब्ध आयुधों का प्रयोग किया। पर अनिरुद्ध ने उनकी परवाह न की। बल्कि अपनी गदा से अंधाधुंध राक्षसों पर प्रहार करने लगा। जो अधिक निकट आये, उन पर अपने ज़ोरदार मुक्कों का प्रहार किया। राक्षसों में से कई मर गये, कुछ बुरी तरह घायल हो गये। बाकी राक्षस मारे भय के भाग कर बाण के निकट जा खड़े हुए। बाण ने बड़े ग़ुस्से से उनको डाँटना शुरू किया—

"तुम लोग प्राणों के मोह से शत्रु को पीठ

दिखा कर भाग आये हो । तुम्हारा शौर्य और पराक्रम बस भागने के लिए ही है! एक समय तुम लोगों के पराक्रम पर निर्भर हो मैंने तीनों लोकों पर विजय प्राप्त की थी, आज तुम लोगों ने मेरे मुँह पर कालिख पोत दी । चलो, मैं तुम्हारे पीछे रथ, गज, तुरग व पैदल सेना के योद्धाओं को भेज देता हूँ । खूब लड़ो, शत्रु का अंत हो जाना चाहिए ।" इन शब्दों के साथ बाणासुर ने कालकेय नामक राक्षसों को अनिरुद्ध से लड़ने के लिए भेजा । वे पृथ्वी तथा आकाश तक छाकर अनिरुद्ध से लड़ने के लिए भेजा । वे पृथ्वी तथा आकाश तक छाकर अनिरुद्ध से लड़ने के लिए आ पहुँचे ।

अनिरुद्ध ने राक्षसों को अपने साथ लड़ने के लिए आते देखा, तो उसने तलवार और ढाल हाथ में लिये राक्षसों का संहार करना शुरू किया । अनिरुद्ध हज़ारों राक्षसों के साथ जूझ रहा था । कड़कती बिजली की भाँति वह लड़ रहा था । नारद को यह युद्ध अत्यन्त अद्भुत लगा । अनेक महारथियों को उसने लड़ते हुए देखा था, पर अनिरुद्ध के समान शत्रु को भ्रमित करनेवाला योद्धा आज तक उसने कभी नहीं देखा था ।

बाणासुर के द्वारा भेजे गये राक्षसों में से कई मर गये, उस भगधड़ में कुछ एंक दूसरे से टकराकर रौंधे गये । आनिरुद्ध का लड़ने का कौशल देख कर सभी राक्षस दंग रह गये । अब कोई लड़ने के लिए आगे आने को तैयार नहीं हुआ । सब को अपने प्राणों की पड़ी थी । कुछ ने भागना उचित समझा । अनिरुद्ध ने गर्जन करते हुए बचे राक्षसों को भगा दिया ।

अनिरुद्ध के हाथों बुरी तरह मार खाकर लौटे हुए अपने राक्षस-योद्धाओं को देख बाणासुर के मन में कोई और आशंका पैदा हुई । उसके हाथों मार खाकर प्राणों से मुक्त हुए इन्द्र आदि देव आज भी उसका नाम सुन कर काँप उठते हैं! इस अवस्था में इस नये नौजवान ने आकर अपने सैनिक बल का सामना कर उसे हराया, क्या ही आश्चर्य है! अब बाण स्वयं इस योद्धा से लड़ने निकल पड़ा ।

वैद्य का यक्ष

रामापुर में रंगदास नाम का एक वैद्य रहता था। कुछ दिनों के बाद वह उस गाँव को छोडकर शहर में जा बसा। शहर में वैद्य के रूप में उसे कुछ विशेष ख्याति प्राप्त नहीं हुई। आमदनी भी पर्याप्त नहीं थी; इसलिये वैद्य का पेशा छोड़कर उसने छोटा-मोटा व्यापार करना शुरू किया और उसमें वह चमक गया। थोड़े ही दिनों में वह एक व्यापारी के रूप में स्थिर हो गया।

कुछ साल बीत गये।

एक दिन रंगदास किसी काम से पड़ोसी गाँव के लिये निकल पड़ा। गाँव की सीमा के पास ही डाकुओं ने उसको लूटा और यहाँ तक, कि उसके कपड़े भी उतरवा कर ले गये। बदले में वे अपने मैले कपडे वहाँ छोड़ गये, ताकि वह उन्हें पहन कर चाहे जहाँ चला जाय।

लाचार होकर वे वस्त्र पहनकर रंगदास गाँव में पहुँचा। उस गाँव में रंगदास की जान पहचान का कोई भी आदमी नहीं था। उस गाँव का काम करने के लिये उसे कुछ धन की आवश्यकता थी; लेकिन उसका वेष देख कर गाँव में कोई भी उसे बड़ा व्यापारी मानने के लिए तैयार नहीं था। सब ने उसे भिखारी समझा। एक व्यापारी ने कहा – "अरे जा, ऐसे बहुत से देखे हैं। कहीं जाकर मज़दूरी करो।"

आखिर वहाँ के एक व्यापारी के पास जाकर रंगदास बोला, "महाशय, एक नये किस्म के चावल खरीदने के लिये मैं इस गाँव आया था। रास्ते में चोरों ने हमला कर के मेरा धन लूट लिया और मेरी यह दुर्दशा कर दी। अपने शहर का एक मशहूर व्यापारी हूँ मैं। चावल की खरेदी में कृपया आप मेरी कुछ मदद कीजिये और मेरे साथ ही शहर चलिये। वहाँ पहुँचकर आप की इस सहायता के लिये आप को दुगुना धन दे दूँगा।"

यह सुनकर व्यापारी ने स्पष्ट कह दिया,

दीपा आर्य

"आज के ज़माने में किसी अनजान आदमी का विश्वास कर के हम उसे धन उधार नहीं देते । फिर भी शहर में मेरे जान-पहचान के कुछ व्यापारी हैं । आप अपना नाम तो बताइये!"

"मेरा नाम रंगदास है ।" रंगदास ने कहा ।

"रंगदास? मैं इस नाम के किसी व्यापारी को नहीं जानता । वैसे तो बहुत सारे व्यापारियों के नाम मैं जानता हूँ । यह रंगदास नाम मैंने आज तक कभी नहीं सुना!" उपेक्षा भाव से व्यापारी ने कहा ।

"महाराज, आप फिर एक बार अच्छी तरह याद कीजिये । शहर में थोड़ा-बहुत मेरा भी नाम मशहूर है । मेरा नाम रंगदास है, आप ने ज़रूर सुना होगा ।" दीनतापूर्वक रंगदास ने अपनी बात दोहरायी ।

पल-दो-पल व्यापारी सोचता रहा । फिर बोला, "रंगदास डडड!...रंगदास! यह नाम तो मैंने कहीं सुना है ।"

"मैंने कहा न, कि शहर में मेरा नाम मशहूर है?" उत्साह में आकर रंगदास ने कहा ।

व्यापारी बोला, "हाँ, हाँ, याद आ गया मुझे! मगर मैं ने जिस रंगदास का नाम सुना है वह शहर के व्यापारी का नहीं; रामापुर में सुना है । रामापुर के हर घर में यह नाम सुनाई देता है । मगर रंगदास तो वैद्य है!"

इस पर आश्चर्य में आकर रंगदास बोला, "महाशय, किसी समय मैं एक वैद्य ही था; रामापुर में रहा करता था । कुछ समय बाद वह गाँव छोड़कर मैं शहर चला गया । वैद्य
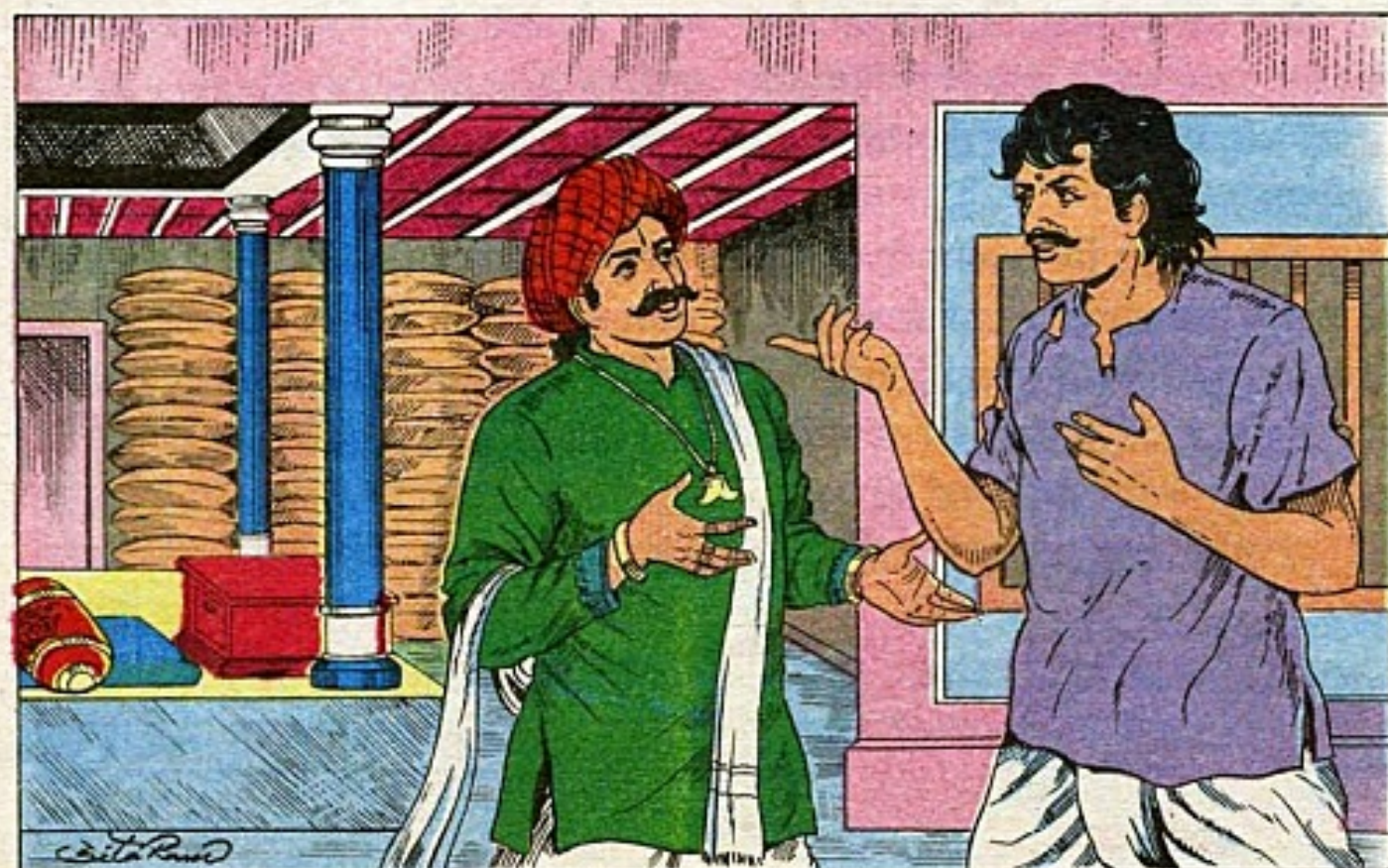
के रूप में अपना परिवार चलाना कठिन देख, मैं ने व्यापार शुरू किया और इसी पेशे में मैंने थोड़ा-बहुत धन और नाम भी कमाया है। आप की कही घटना बहुत पहले की है, मैं स्वयं भी भूल गया कि मैं चिकित्सा-शास्त्र का ज्ञान रखता हूँ। मुझे तो आश्चर्य होता है, कि रामापुर में अभी तक लोग मेरा नाम याद रखते हैं। क्या आप बता सकते हैं, कि आप रामापुर कब गये थे?"

"हाल ही में मेरी छोटी बहन की शादी हुई है। उसका ससुराल रामापुर में है। अभी दो हफ़्ते पहले उसे पहुँचाने मैं रामापुर गया हुआ था। विश्वास कीजिये, वहाँ ऐसा कोई घर नहीं, जहाँ आप का स्मरण नहीं किया जाता हो।" व्यापारी ने कहा।

अब रंगदास की समस्या हल हो गयी। वह व्यापारी जब से रामापुर से लौटा, तब से रंगदास को देखने का कौतुहल उसके मन में था। अब अपनी इच्छा की पूर्ति होते देख व्यापारी खुश हो गया। उसने रंगदास को पहनने को लिये ढंग के कुछ कपड़े दिये, खाना खिलाया और आवश्यक धन भी दिया। रंगदास का काम बनने पर व्यापारी उसके साथ शहर गया और अपना धन पाकर वापस चला गया।

रंगदास ने अपनी पत्नी को सारा वृत्तान्त सुनाकर कहा, "हम ने रामापुर छोड़ कर शायद बड़ी गलती की। वहाँ तो हमारा यश घर-घर में फैला हुआ है, तुम ने ही वह गाँव छोड़नेको मुझे बाध्य किया। और तो और, एक बार शहर में जा बसने के बाद तुम ने मुझे एक बार भी उस गाँव में जाने नहीं दिया।

अब मुझे अच्छा समाचार मिला है, इसलिये अब तो मैं रामापुर गये बिना नहीं रह सकता । हम सपरिवार कुछ दिन वहाँ बिताकर लौट आयेंगे ।"

रंगदास की पत्नी इस पर बोली, "मैं अच्छी तरह जानती हूँ, कि प्रारम्भ से ही वहाँ आप का कैसा नाम है । मेरी बात मान लीजिये, हमें उस गाँव में बिलकुल नहीं जाना चाहिये ।"

"आज तक मैं तुम्हारी बात मानता रहा । अब मैं बिलकुल नहीं माननेवाला! रामापुर में हमारा जो नाम है, उसके बारे में तुम ने आज तक क्यों नहीं कहा? क्या मुझे यश मिले तो तुम्हें पसन्द नहीं है?" क्रोध में आकर रंगदास ने पूछा ।

"ऐसी कोई बात नहीं है । दरअसल रामापुर के लोग यह समझते हैं, कि आप इलाज करना जानते ही नहीं; आप की दवा कालकूट विष के जैसी कड़वी होती है । यदि कोई किसी पर नाराज़ हो जाता, तो वह यह कहकर उसे धमकी देता था, कि ठहरो, मैं रंगदास से तुम्हारा इलाज करवा देता हूँ । माताएँ भी जब अपने बच्चों को डाँटती, तो यही कह देती थी, कि—अरे कम्बख्त, तुम बराबर खाँस रहे हो, तुम हड मुँह में रखोगे, कि रंगदास से तुम्हारा इलाज करवाएँ? इस प्रकार हर कोई किसी न किसी रूप में तुम्हारा मज़ाक उड़ाया करते थे । मुझ से यह देखा नहीं गया; इसीलिये शहर जाने के लिये मैं ने तुम्हें उकसाया । आजतक मैंने यह बात इसलिये गुप्त रखी कि असलियत जानने पर आप दुखी हो जायेंगे । इतने वर्ष पूर्व वह गाँव छोड़ने पर भी वहाँ के लोग आप का मज़ाक उड़ाने से नहीं चूकते हैं—यही इस का मतलब है न? वे लोग भी कैसे विचित्र हैं! अब आप ही अच्छी तरह सोचिए कि इस रामापुर में जाना उचित है कि नहीं!" रंगदास की पत्नी ने व्याकुल होकर कहा ।

यह समाचार मालूम होने पर रंगदास रामापुर नहीं गया, इतना ही नहीं, कि वक्त पर अपनी मदद करनेवाले उस व्यापारी के गाँव भी नहीं गया ।

गुप्तवसीयतनामा

(पिछले अंक से आगे)

साल पर साल गुज़रते गये । अब षान-षू चौदह साल का हो गया । एक दिन उसने अपनी माँ से पूछा—"माँ, मुझे कुछ रेशमी कपड़े क्यों न बनवा दें?" माँ ने अपने पास पैसा न होने की बात बता दी । इस पर षान-षू ने कहा—"हमारे पिताजी तो राज-प्रतिनिधि थे न? उनके हम दो ही तो पुत्र हैं । जब भाई के पास इतना सारा धन है, मेरे लिए नये वस्त्र बनवाने के लिए पैसा क्यों नहीं है?" माँ ने उसे ऐसा कहने से मना किया ।

षान-षू माँ की आँख बचाकर अपने बड़े भाई के पास गया और कहा—"भैया, हमारे पिताजी तो बहुत बड़े आदमी थे । मेरे कपड़े देख सब लोग मुझ पर हँस देते हैं । मुझे थोड़ा रेशमी कपड़ा दो तो मैं नये कपड़े सिलवा लूँगा ।"

"तुम नये कपड़े चाहते हो, जाकर अपनी माँ से क्यों नहीं पूछते हो?" षान-ची ने छोटे भाई को डाँटा । फिर एक ज़ोर का थप्पड़ लगा दिया । षान-षू ने माँ को सब किस्सा कह सुनाया ।

पुत्र के सिर पर हाथ फेरते हुए आँसू भर कर माँ ने षान-षू से कहा—"मैंने तुमको मना किया था, पर तुमने मेरी बात नहीं मानी । तुमको उसकी सज़ा मिल गई ।" इसके बाद षान-ची से क्षमा माँगने के लिए उसने अपनी दासी को भेजा और कहलाया—"अभी लड़का अनजान है, उस पर कृपया नाराज़ न हूजिए ।"

फिर भी षान-ची का गुस्सा कम नहीं हुआ । दूसरे दिन सबेरे उसने अपने सभी रिश्तेदारों को बुलवाया और मेय तथा षान-षू के सामने उन लोगों से कहा—"आप सब लोग ध्यान से सुनिए । आप लोग ऐसा मत समझिए कि मैं षान-षू का शत्रु हूँ ।

चीन की एक लोक-कथा

उसको भगाने की मेरी बिलकुल इच्छा नहीं है। कल षान-षू ने आकर जायदाद के बारे में मुझ से झगड़ा किया। अगर अभी यह हाल है, तो भविष्य में जाने क्या होगा! इस लिए आप सब लोगों के समक्ष पिताजी के मृत्युपत्र में लिखे आदेशानुसार षान-षू का हिस्सा उसे दे रहा हूँ। पूर्व की ओर का मकान आज से उसका है और २० सेंट ज़मीन मैं उसे दे रहा हूँ। आप सब लोग कृपया जानिए कि वसीयत में दी गई सूचनाओं का मैं पूर्णतया पालन कर रहा हूँ।" कहते हुए पिता की ओर से प्राप्त पुस्तक उसने सब के सामने रख दी।

कुछ लोगों को यह बँटवारा अन्यायजनक लगा अवश्य, पर उन्होंने कोई आपत्ति नहीं उठाई। वे आपस में कहते रहे—"जो समर्थ है, वह अपने पिता की संपत्ति का भोग क्यों न करेगा? जो कड़ी मेहनत करता है, उसे किस बात की भला कमी होगी? कुछ लोग अपनी किस्मत से लखपति बन ही जाते हैं!"

इसके बाद मेय और षान-षू अपने थोड़े सामान के साथ पूर्ववाले मकान में चले गये। वह बहुत ही पुराना मकान था। सभी कमरों में बरसात का पानी चूता था। एक-दो कमरे साफ करके माँ-बेटे दोनों उसमें रहने लगे। उनको अपने हिस्से में जो ज़मीन मिली, वह भी बंजर थी। मेहनत करने पर भी उसमें से कुछ फ़सल निकालना मुश्किल ही था। मेय ने उस ज़मीन में कुछ धान बोया, सब नष्ट हो गया।

यों एक वर्ष बीत गया। एक दिन मेय को समाचार मिला कि उसके गाँव में एक बड़े मेधावी न्यायाधिकारी नये-नये आ गये हैं। कुछ दिन पहले गाँव में किसी एक दर्ज़ी की बीवी ने एक आदमी पर हत्या का आरोप लगा कर पुराने न्यायाधिकारी के पास फरियाद पेश की थी। न्यायाधिकारी ने उस आरोप पर विश्वास किया और आरोपी को मृत्यु-दण्ड सुनाया था। इतने में ये नये अधिकारी आये। उन्होंने युक्तिपूर्वक असली खूनी का पता लगाया और निर्दोष असामी को मुक्त कर दिया। सब लोगों ने उनकी इस न्यायप्रियता की तारीफ़ की।

मेय ने सोचा ऐसे न्यायाधिकारी द्वारा उसके पुत्र के प्रति जो अन्याय हुआ है, उसे मिटाया जा सकता है। उसने अपने पति के

द्वारा प्राप्त चित्र का उनके हाथ सौंप कर निवेदन किया—"प्रभु, षान-ची ने मेरे पति की पूरी संपत्ति पर कब्ज़ा कर लिया है । हमें हमारा आधा हिस्सा वह नहीं दे रहा है । आप हमारे प्रति न्याय करेंगे? मृत्यु के समय मेरे पति ने यह चित्र मेरे हाथों में देकर कहा था, कि असली वसीयत का रहस्य इस में छिपा है । कोई बुध्दिशाली और धर्मात्मा न्यायाधिकारी इस रहस्य का पता लगा सकता हे । आप से प्रार्थना है कि आप हमें उचित न्याय दें ।"

न्यायाधिकारी ने चित्र अपने पास रख लिया और मेय को घर जानेके लिए कहा । बाद में उन्होंने उस चित्र को भली भाँति परखकर देखा, पर उनकी कुछ समझ में नहीं आया । आखिर उन्होंने वस्त्र पर चिपकाये चित्र को वस्त्र से अलग किया, चित्र के पीछे लिखा हुआ था—

"मैं वृद्ध हो गया हूँ । मेरा दूसरा पुत्र षान-षू बालक है । बड़ा लड़का षान-ची बड़ी दुष्ट प्रकृति का है । वह अपने छोटे भाई को धोखा दे सकता है । मैं अपने सारे खेत और दो मकान षान-ची को दे रहा हूँ । पर पूर्व दिशावाला मकान षान-षू को मिलना चाहिए । यह मकान पुराना है ज़रूर, पर उसकी पूर्वी दीवार के नीचे बीस मन वज़न की चाँदी पाँच झारियों में रखी है । इसी प्रकार पाश्चिमी दीवार में पाँच झारियों में बीस मन चाँदी और छठी झारी में चार मन सोना भरा हुआ है । ज़मीन के बदले में यह सारी संपत्ति मेरे छोटे लड़के को मिलनी चाहिए ।"

अंत में वृद्ध के हस्ताक्षर और तारीख अंकित थे ।

दूसरे दिन न्यायाधिकारी ने षान-ची को बुलवा लिया । षान-ची के आने पर न्यायाधिकारी ने पूछा—"तुम्हारी सौतेली माँ ने तुम्हारे खिलाफ़ फरियाद पेश की है । शिकायत यह है कि तुमने अपने सौतेले भाई को न्यायपूर्वक जायदाद का आधा हिस्सा बाँट कर नहीं दिया है । क्या यह बात सच है?"

षान-ची ने जवाब दिया—"महानुभाव, आप कृपया मेरी बात ध्यान से सुनिए । मेरे पास पिताजी का लिखा वसीयतनामा है । उसमें मेरे पिताज़ी ने छोटे भाई को जो कुछ देनेके लिए लिखा है, वह सब मैंने उसको दे

दिया है । आप चाहें तो उस पुस्तक को देख सकते हैं । फिर आप जो न्याय देंगे, मैं मान लूँगा ।

"अच्छी बात है । कल मैं स्वयं तुम्हारे घर पहुँच कर तुम्हारे पिता द्वारा लिखी वसीयत पढ़ूँगा, और फिर अपना फ़ैसला सुनाऊँगा ।" न्यायाधिकारी ने कहा ।

फिर न्यायाधिकारी ने षान-ची को घर रवाना किया और मेय को समाचार भेजा कि दूसरे दिन सवेरे वह अपने पुत्र को लेकर षान-ची के घर उपस्थित रहे ।

षान-ची ने दूसरे दिन सुबह अपने मकान के आँगन को अच्छी तरह सजाया, न्यायाधिकारी के बैठने के लिए कुर्सी पर बाघ का चमड़ा बिछा दिया । अपने सभी रिश्तेदारों को खबर दी कि वे ठीक समय पर उसके घर पहुँच जाएँ । वक्त पर सब लोग षान-ची के घर आ गये ।

इतने में न्यायाधिकारी पालकी पर सवार हो अपने सेवकों के साथ षान-ची के घर पहुँचे । कहारों ने पालकी को दरवाज़े के समीप उतारा । न्यायाधिकारी ड्योढ़ी तक पहुँचे । उन्होंने स्वाँग रचा जैसे कि वे किसी को देख रहे हैं, उनके सामने झुक कर प्रणाम किया और अन्दर जाने का रास्ता दिखाते हुए कहा—"चलिए जी, आप अंदर चलिए जी, आप अंदर चलिएगा ।"

उन्होंने इस प्रकार सारा व्यवहार किया, मानो किसी को साथ लेकर घर में प्रवेश कर रहे हों । फिर उस अदृश्य व्यक्ति को व्याघ्र-चर्मवाली कुर्सी दिखाई और कहा—'बैठिए, आप इस आसन पर बिराजिए ।' और फिर दूसरी कुर्सी पर स्वयं बैठे गये । बातचीत चालू रखनेका अभिनय करते हुए कहा-"देखिए, आपकी पत्नी ने मेरे पास फ़रियाद दाखिल की है । इस मामले को हल करने के लिए आप क्या सलाह देते हैं? .....ओह, यह बात है! आप के बडे लड़के का व्यवहार बिलकुल अनुचित है! आप अपने छोटे पुत्र को क्या देना चाहते हैं? पूरबवाला मकान? लेकिन फिर वह अपना जीवन-यापन कैसे करेगा?.....ओह.....ऐसा कहते हैं? जी हाँ, ऐसा ही करूँगा । यह सब आपके छोटे पुत्र के लिए ही है? आपने जो कुछ कहा, मैं वैसा ही करूँगा ।"

सुननेवाले यह विचार कर कुछ घबरा गये कि न्यायाधिकारी किसी भूत या प्रेत के साथ बातचीत कर रहे हैं । इस लिए उनसे बात तक करते वे डरने लगे। आखिर न्यायाधिकारी उठ खड़े हुए, और झुक कर कहा—''तो अच्छी बात है, अब आप मुझे आज्ञा दीजिएगा ।''

और फिर न्यायाधिकारी सीधे खड़े हो गये और विस्मय के साथ चारों तरफ नज़र दौड़ाई । अब षान-ची की ओर मुड़ कर पूछा-''तुम्हारे पिताजी अभी तक मुझ से यहाँ बात कर रहे थे, तब कहाँ गये थे तुम? हमारी बातचीत तुमने सुनी ही होगी!''

''मैंने तो नहीं सुना, यह सब मुझे बड़ा आश्चर्यजनक लग रहा है ।'' षान-ची ने कहा ।

''लंबा कद, दीर्घ मुख, जबड़ों की हड्डियाँ उभरी हुई, बादाम जैसी आँखें, लंबी भौंहें, बड़े कान, पतली सफ़ेद दाढ़ी और शाही टोपी धारण किये हुए थे । साथ ही काले जूते, लाल लुंगी और कमर में सोने की पट्टी बाँधे हुए थे । वे राजप्रतिनिधि 'नी' ही तो थे न?'' न्यायाधिकारी ने पूछा ।

''जी हाँ, उनके जीवित रहते वे हू-ब-हू ऐसे ही थे जैसा आप ने वर्णन किया ।'' रिश्तेदारों ने एक स्वर में उत्तर दिया । वास्तव में न्यायाधिकारी ने चित्र के आधार पर 'नी' का वर्णन किया था, पर यह बात कोई जानता न था । सब ने यही सोचा कि न्यायाधिकारी को मृतात्मा के साक्षात् दर्शन हुए ।

''सुना है, तुम्हारे दो मकान हैं और पूरब

की दिशा में एक और मकान भी! चलो, हम उस मकान के पास चलें। वहाँ पर मैं तुम्हें कुछ और बता दूँगा।" न्यायाधिकारी ने कहा। अब षान-ची उनके साथ उस मकान के पास पहुँचा। न्यायाधिकारी ने पूछा—"यह मकान तुम अपने छोटे भाई को देने के लिए तैयार हो?"

"जी हाँ।" षान-ची ने झट कहा।

इस के बाद न्यायाधिकारी उस मकान के मध्यवाले एक कमरे में बैठ गये और पुस्तक को उलट-पलट कर कहा-"बस, इस में तो सारी बातें एकदम स्पष्ट हैं। षान-षू को इस से अधिक कुछ नहीं मिलेगा।"

मेय को बहुत ही दुख हुआ। उसने सोचा उसके पुत्र को यहाँ भी न्याय मिलता नज़र नहीं आता।

"तो अब षान-ची, सुन लो। तुम्हारे पिताजी ने थोड़ी देर पहले मुझ से कहा था कि इस मकान में चालिस मन चांदी और चार मन सोना गड़ा रखा है। तब तो वह सब षान-षू को ही प्राप्त होगा।" न्यायाधिकारी ने कहा। पर षान-ची ने न्यायाधिकारी की बातों पर विश्वास नहीं किया। उसने कहा—"चाहे जितने मन सोना और चाँदी हो, वह षान-षू की ही संपत्ति होगी। मुझे इसमें कोई आपत्ति कैसे हो सकती है?"

"अगर बाद में तुम कुछ बखेड़ा खड़ा करोगे तो मैं चुप नहीं रहूँगा।" कहते हुए न्यायाधिकारी ने मकान की पूर्वी दीवार को खुदवाया। तब पाँच चाँदी-भरी झारियाँ निकलीं। इसी प्रकार पश्चिमी दीवार खुदवाने पर और पाँच झारियों में चाँदी पाई गई और छठी झारी में सोना निकला।

न्यायाधिकारी ने उन सब चाँदी व सोना भरी झारियों को षान-षू को सौंपा। तब षान-ची अपने मन में विचार करते हुए व्याकुल होने लगा—अगर मैंने पिता की सारी संपत्ति का समान रूप से बँटवारा किया होता, तो मुझे भी इस सोने व चाँदी का आधा हिस्सा मिल जाता। लेकिन अब..... कहावत है—

तब पछताए होत क्या,
जब चिड़िया चुग गई खेत?

(राक्षस चिपकली [डायनोसोर] के अण्डे की बगल में मुर्गी का अण्डा)
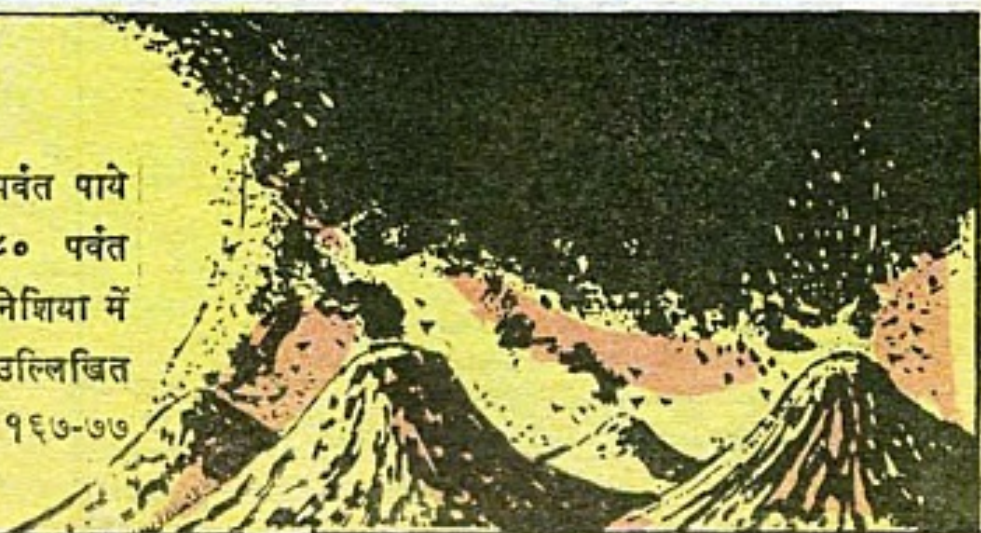
"CRIPPLE"

The word can maim a child for life.

Imagine not being able to race your best friend. Imagine not having a best friend. Imagine being struck by Poliomyelitis before you even know the word. Or what it means. And be called a "cripple" for life.

Every year, Poliomyelitis or Polio strikes 275,000 children in India. In rural India, 1 in every 150—200 surviving newborn is in danger of developing polio unless urgent preventive measures are taken. And, while you read this, there are 1.6 million polio-stricken children in the country, most of them handicapped for life. If only they had been immunized... in time.

PolioPlus
The Rotarian Relief Programme

Rotary International has embarked on a world-wide immunization programme called PolioPlus. Through this programme, Rotary will provide all polio vaccines necessary for upto 5 consecutive years, for children in countries around the world.

Plus immunization against common childhood diseases like measles, diphtheria, tuberculosis, tetanus and whooping cough—diseases which take 3.5 million young lives in the developing world, every year.

PolioPlus

Cut and mail to :
Chairman
POLIOPLUS CAMPAIGN TRUST
128, Golf Links
New Delhi-110 003.

Here's what You Can Do

YES, WE WISH TO SUPPORT THE POLIOPLUS CAMPAIGN TRUST

We enclose our Cheque/Draft of Rs. ....
Name ....
....
Designation ....
....
Company Address ....
....
Phone No. ....

Cheques/Drafts should be drawn in favour of POLIOPLUS CAMPAIGN TRUST payable in Bombay, Contributions are exempted from income tax under section 80 (G) of the Income Tax Act, 1961.

CMP

***"YOU HAVE NOT DONE ENOUGH AS LONG AS YOU ARE CAPABLE OF DOING MORE."* ACT NOW.**

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां दिसम्बर १९८९ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी ।

M. Natarajan

M. Natarajan

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों । ★ अक्तूबर १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए । ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा । ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें : चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

अगस्त के फोटो - परिणाम

प्रथम फोटो : विघ्न नाशक श्रीगणेश !

द्वितीय फोटो : देवालयों का यह देश !!

प्रेषक : ओम उपाध्याय, १८, ई. डब्ल्यू. एस. कस्तूरबा नगर, हबीबगंज, भोपाल (म.प्र.)

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु. ३६-००

चन्दा भेजने का पता :

डॉल्टन एजेन्सीज, चन्दामामा बिल्डिंग्ज, वडपलनी, मद्रास - ६०० ०२६

अन्य देशों के चन्दे सम्बन्धी विवरण के लिए निम्न पते पर लिखिये :

चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्ज, वडपलनी, मद्रास - ६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

JUNIOR
QUEST
Where finding out is fun
AIM NOW FOR
THE IDEAL TEACHER CONTEST!
TEACHER'S
DAY SPECIAL
Rush for the
September issue
of every child's
favourite magazine!
PRICE RS 5/-

मीठी-मीठी बात आम-बगिया के
मिट्ठू के साथ
ए देख! मेरी नई मैंगो स्वीट!
ए देख! मेरी नई मैंगो स्वीट!
बताऊँ मिट्ठू! इसमें असली आम है!
बताऊँ मिट्ठू! इसमें असली आम है!
शुऽऽऽऽऽप बदमाश! मेरी एक-नई मैंगो स्वीट खाकर देख!
शुऽऽऽऽऽप बदमाश! मेरी एक-नई मैंगो स्वीट खाकर देख!
पता है? इसका नाम क्या है? (????)
आम-रस!
क्या कहा! फिर बताना. (????)
आऽऽऽऽम-रऽऽऽऽऽस! बस. बच्चू! अमृत वचन बार-बार नहीं बोले जाते!
ही... ही... ही!
न्यूट्रीन
आम-रस
अंदर असली आम बंद,
बाहर अपार आनंद ... होक मे,
मिट्ठू जैसे रंग-बिरंगे पैक मे.
असली आम
THE FINEST, WIDEST RANGE
Nutrine
Visesh/NC/8940/Hin